सी-नाममाला

(हिन्दी-शब्दकोष)

सम्पादक

जुगलकिशोर मुख्तार

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली

★

क्रम संख्या

काल नं०

खण्ड

प्रकीर्णक पुस्तकमालाका प्रथम पुष्प

बनारसी-नाममाला

अर्थात्

कविवर पं० बनारसीदासकृत-

हिन्दी शब्दकोष

सम्पादक

जुगलकिशोर मुख्तार

अधिष्ठाता 'वीरसेवामन्दिर'

प्रकाशक—

वीरसेवामन्दिर

सरसावा जि० सहारनपुर

प्रथमावृत्ति ५०० प्रति | सन १९४१ | मूल्य चार आने

प्रकाशक—
वीर-सेवा-मन्दिर
सरसावा ज़िला सहारनपुर

मुद्रक—
श्रीवास्तव प्रिंटिंग प्रेस
सहारनपुर

प्रकाशकके दो शब्द

इस 'बनारसी-नाममाला' और उसके रचयिता कविवर पण्डित बनारसीदासजीका संक्षिप्त परिचय आश्रमके विद्वान शास्त्री पं० परमानन्दजी ने अपनी 'प्रस्तावना' में दे दिया है। यहाँ पर सिर्फ इतना और प्रकट कर देना है कि ग्रंथकी उपयोगिताको बढ़ानेके लिये आधुनिक पद्धतिसे तय्यार किया गया 'शब्दानुक्रमणिका' के रूपमें एक 'शब्दकोष' भी साथमें लगाया जा रहा है, जिससे सहज ही में मूल कोषके अन्तर्गत शब्दों और उनके अर्थोंको मालूम किया जा सकेगा, और इससे प्रस्तुत कोषका और भी अच्छी तरहसे उपयोग हो सकेगा तथा उपयोग करनेवालोंके समयकी काफी बचत होगी। इस शब्दकोषके तय्यार करनेमें

पं० परमानन्दजीने सूचनानुसार जो परिश्रम किया है उसके लिये वे धन्यवादके पात्र हैं।

यहाँ बाबू पन्नालालजी जैन अग्रवाल देहली और पं० रूपचन्दजी जैन, गार्गीय पानीपत को धन्यवाद दिये बिना भी मैं नहीं रह सकता, जिन की कृपासे इस 'नाममाला' की दो प्रतियां प्राप्त हुई हैं और जिसके फलस्वरूप ही यह ग्रन्थ प्रकाशमें आरहा है।

इस ग्रंथके साथमें जिस प्रकीर्णक-पुस्तक-माला-का प्रारम्भ हो रहा है, उसमें ऐसी ही उपयोगी छोटी छोटी पुस्तकें प्रकाशित हुआ करेंगी। आशा है जनता इस पुस्तकमालाको ज़रूर अपनाएगी।

अधिष्ठाता 'वीरसेवामन्दिर'

प्रस्तावना

दिगम्बर जैन समाजमें हिन्दी भाषाके अनेक अच्छे कवि और गद्यलेखक विद्वान हो गये हैं। उनकी रचनाओंसे समाज आज गौरवान्वित हो रहा है। जिस तरह हिन्दीके गद्यलेखकों—टीकाकारोंमें आचार्यकल्प पं० टोडरमलजी, पं० जयचन्दजी और पं० सदासुखरायजी आदि विद्वान् प्रधान माने जाते हैं, उसी तरह कवियोंमें पं० बनारसीदासजीका स्थान बहुत ही ऊँचा है। आप गोस्वामी तुलसीदासजीके समकालीन विद्वान् थे, १७ वीं शताब्दीके प्रतिभासम्पन्न कवि थे और कवितापर आपका असाधारण अधिकार था। आपकी काव्य-कला हिन्दी-साहित्यमें एक निराली छटाको लिये हुए है। उसमें कहींपर भी शृंगार जैसे रसोंका अथवा स्त्रियोंकी शारीरिक सुन्दरता

का वह बढ़ा चढ़ा हुआ वर्णन नहीं है जिससे आत्मा पतन की ओर अग्रसर होता है। आपके ग्रन्थरत्नोंका आलोडन करनेसे मालूम होता है कि आपके पास शब्दोंका अमित भंडार था, और इसीसे आपकी कविताके प्रायः प्रत्येक पदमें अपनी निजकी छाप प्रतीत होती है। कविता करनेमें आपने बड़ी उदारतासे काम लिया है। आपकी कविता आध्यात्मिक रससे ओत-प्रोत होते हुए भी बड़ी ही रसीली, सुन्दर तथा मन-मोहक है, पढ़ते ही चित्त प्रसन्न हो उठता है और हृदय शान्तिरससे भर जाता है। सचमुचमें आपकी आध्यात्मिक कविता प्राणियोंके संतप्त हृदयोंको शीतलता प्रदान करती और मानस- सम्बन्धी आन्तरिक मलको छांटती तथा शमन करती हुई अक्षय सुखकी अलौकिक सृष्टि करती है। आपकी कविताओंके पढ़नेका मुझे बड़ा शौक है—वह मेरे जीवन का एक अंग बन गई है। जब तक मैं नाटक समयसारके दो चार पद्योंको रोज नहीं पढ़ लेता तब तक हृदयको शांति

नहीं मिलती। अस्तु।

कविवर बनारसीदासजीका जन्म संवत् १६४३ में जौनपुरमें हुआ था। आपके पिताका नाम खड्गसेन था। आपने स्वयं अपनी आत्म-कथाका परिचय 'अर्द्धकथानक'के रूपमें दिया है, जो ६७३ दोहा-चौपाइयोंमें लिखा गया है और जिसमें आपकी ५५ वर्षकी जीवन-घटनाओंका तथा आत्मीय गुण-दोषोंका अच्छा परिचय कराया गया है। आपकी यह आत्मकथा अथवा जीवन-चरित्र भारतीय विद्वानोंके जीवन-परिचयरूप इतिहासमें एक अपूर्व कृति है। अर्धकथानकके अवलोकनसे स्पष्ट मालूम होता है कि आपका जीवन अधिकतर विपत्तियोंका—संकटोंका—सामना करते हुए व्यतीत हुआ है, और आपने उनपर सब धैर्य तथा साहसका अवलम्बन कर विजय प्राप्त की है।

यद्यपि भारतीय अनेक कवियोंने अपने अपने जीवन-चरित्र स्वयं लिखे हैं, परन्तु उनमें अर्धकथानक-जैसा आत्मीय

गुण-दोषोंका यथार्थ परिचय कहीं भी उपलब्ध नहीं होता। अर्धकथानकमें उपलब्ध होनेवाले १६४३ से १६९८ तकके (५५ वर्षके) जीवनचरित्रके बाद कविवर अपने अस्तित्वसे भारतवर्षको कितने समय तक और पवित्र करते रहे, यह ठीक मालूम नहीं होता। हाँ, बनारसीविलासमें संगृहीत 'कर्मप्रकृतिविधान' नामक प्रकरणके निम्न अंतिम पद्यमे इतना जरूर मालूम होता है कि आपका अस्तित्व संवत् १७०० तक ज़रूर रहा है; क्योंकि इस संवत्के फाल्गुन मासमें उसकी रचना की गई है। यथा—

संवत् सत्रहसौ समय, फाल्गुण मास वसन्त।
ऋतु शशिवासर सप्तमी, तब यह भयो सिद्धंत॥

आपकी बनाई हुई इस समय चार रचनाएँ उपलब्ध हैं—नाटक समयसार, बनारसी-विलास (फुटकर कविताओं का संग्रह) अर्द्धकथानक और नाममाला। इनमेंसे शुरूके दो ग्रन्थ तो पूर्ण प्रकाशित हो चुके हैं, और अर्द्धकथानक

का बहुत कुछ परिचय एवं उद्धरण पं० नाथूरामजी प्रेमीने बनारसीविलासके साथ दे दिया है। जनता इन तीनों से यथेष्ट लाभ भी उठा रही है। परन्तु चौथा ग्रन्थ 'नाम-माला' अबतक अप्रकाशित ही था। आज वह भी जनताके सामने उपस्थित किया जारहा है, यह निःसन्देह बड़ी ही प्रसन्नताका विषय है।

इस ग्रन्थकी रचना संवत् १६७० में, बादशाह जहाँगीर के राज्यकालमें, आश्विन मासके शुक्लपक्षमें विजयादशमी को सोमवारके दिन, भानुगुरुके प्रसादसे पूर्णताको प्राप्त हुई है। इस ग्रन्थके बनवानेका श्रेय आपके परममित्र नरोत्तमदासजीको है, जिनके अनुरोध एवं प्रेरणासे यह बनाया गया है। जैसा कि ग्रन्थके पद्य नं० १७०, १७१, १७२, १७५ से स्पष्ट है।

इस ग्रन्थकी रचनाका प्रधान आधार महाकवि धनंजय का वह संक्षिप्त कोष है जिसका नाम भी 'नाममाला' है

और जो अनेकार्थ-नाममाला सहित २५२ संस्कृत पद्योंमें पूर्ण हुआ है। परन्तु उस नाममालाका यह अविकल अनुवाद नहीं है और न इसमें दोसौ दोहोंकी रचना ही है, जैसा कि पं० नाथूरामजी प्रेमीने बनारसीविलासमें प्रकट किया है*। इस ग्रन्थके निर्माणमें दूसरे कोषोंसे कितनी ही सहायता ली गई है। ग्रन्थकी रचना बड़ी ही सुगम, रसीली और सहज अर्थावबोधक है। यह कोष हिन्दी भाषाके अभ्यासियोंके लिये बड़ी ही कामकी चीज़ है। अभी तक मेरे देखने में हिन्दी भाषाका ऐसा पद्यबद्ध दूसरा कोई भी कोष नहीं आया। संभव है इससे पहले या बादमें हिन्दी पद्योंमें और भी किसी कोषकी रचना हुई हो।

---

*"अजितनाथके छंदो और धनंजय-नाममालाके दोसौ दोहा की रचना इसी समय की।"

"यह महाकवि श्री धनंजयकृत नाममलाका भाषा पद्यानुवाद है।" —बनारसी-विलास पृ० ६७, १११

यहाँ एक बात और प्रकट कर देनेकी है, और वह यह कि यह 'नाममाला' कविकी उपलब्ध सभी रचनाओंमें पूर्वकी जान पड़ती है। यद्यपि इससे पूर्व उक्त कविवरने युवावस्थामें शृङ्गाररसका एक काव्यग्रन्थ बनाया था, जिसमें एक हजार दोहा-चौपाई थीं, परन्तु उसे विचारपरिवर्तन होनेके कारण नापसंद करके गोमतीके अथाह जलमें बिना किसी हिचकिचाहटके डाल दिया था। होसकता है कि 'नाममाला' की रचना उक्त काव्य-ग्रन्थके बाद की गई हो; परन्तु कुछ भी हो, कविवरकी उपलब्ध सभी रचनाओंमें यह ग्रन्थ पहली कृति है। इसीसे २३ वर्ष बाद की गई नाटक समयसारकी रचनामें गम्भीरता, प्रौढता और विशदता और भी अधिक उपलब्ध होती है।

नाटक समयसारकी उत्थानिकामें वस्तुओंके नामवाले कितने ही पद्य पाए जाते हैं, उनकी नाममालाके पद्योंके साथ तुलना करनेसे नाटक समयसारवाले पद्योंकी प्रौढता,

गम्भीरता और कविवरके अनुभवकी अधिकता स्पष्ट दिखाई देती है; २३ वर्षके सुदीर्घकालीन अनुभवके बादकी रचनामें अधिक सौष्ठव, सरसता एवं गाम्भीर्यका होना स्वाभाविक ही है। नाटक समयसार वाले उन पद्योंको जो नाममालाके पद्योंके साथ मेल खाते थे यथास्थान फुटनोटोंमें दे दिया गया है। शेष जिन नामोंवाले पद्य नाममालामें दृष्टिगोचर नहीं होते उन्हें पाठकोंकी जानकारीके लिये नीचे दिया जाता है:—

[1]दरस विलोकनि देखनौ, अवलोकनि दृगचाल।
लखन दृष्टि निरखनि जुवनि, चितवनि चाहनि भाल ॥४७॥
[2]ग्यान बोध अवगम मनन, जगतभान जगजान।
[3]संजम चारित आचरन, चरन वृत्त थिरवान ॥४८॥
[4]सम्यक सत्य अमोघ सत, निसंदेह निरधार।

---

१ दर्शननाम, २ ज्ञाननाम, ३ चारित्रनाम, ४ सत्यनाम।

टीक जथारथ उचित नथ [5]मिथ्या आदि अकार ॥४६॥

इस 'नाममाला' कोषमें कोई ३५० विषयोंके नामोंका सुन्दर संकलन पाया जाता है, जिससे हिन्दीभाषाके प्रेमी यथेष्ट लाभ उठा सकते हैं। कितने ही तो इस छोटीसी पुस्तकको सहज ही में कण्ठ भी कर सकते हैं। नामोंमें हिन्दी (भाषा), प्राकृत और संस्कृत ऐसे तीन भाषाओंके शब्दोंका समावेश है; बाकी जानि, बखानि, सु, जान, तह इत्यादि शब्द पद्योंमें पादपूर्तिके लिये प्रयुक्त हुए हैं, यह बात कविने स्वयं तीसरे दोहेमें सूचित की है।

इस कोषका संशोधनादि कार्य मुख्यतया एक ही प्रतिपरसे हुआ है, जो सेठका कूँचा देहलीके जैनमंदिरकी पुस्तकाकार १५ पत्रात्मक प्रति है, श्रावण शु० सप्तमी संवत्

---

५ सत्यके नामोंकी आदि में 'अ'कार जोड देनेसे मिथ्याके नाम हो जाते हैं।

१६३३ की लिखी हुई है, पं० बांकेरायकी मार्फत रामलाल श्रावक दिल्ली दर्वाजेके रहने वालेसे लिखाई गई है और उसपर मंदिरको, जिसके लिये लिखाई गई है, 'इंद्राजजीका' मंदिर लिखा है। बादको एक दूसरी शास्त्राकार १२ पत्रात्मक प्रति पानीपतके छोटे मंदिरके शास्त्रभंडारसे मार्फत पं० रूपचन्दजी गार्गीयके प्राप्त हुई, जो संवत् १८६८ आश्विन शुक्ल द्वितीया शनिवारकी लिखी हुई है और जिसे चौधरी दीनदयालने जलपथनगर (पानीपत) में लिखा है। इस प्रतिका पहला और अन्तके ४ पत्र दूसरी कलमसे लिखे हुए हैं और वे शेष पत्रोंकी अपेक्षा अधिक अशुद्ध है। इस प्रतिसे भी संशोधनादिके कार्यमें कितनी ही सहायता मिली है। यों प्रतियाँ दोनो ही थोड़ी-बहुत अशुद्ध हैं और उनमें साधारण-सा पाठ-भेद भी पाया जाता है; जैसे देहलीकी प्रतिमें तनय, तनया, पाठ हैं तो पानीपतकीप्रतिमें तनुज, तनुजा पाठ पाये जाते हैं स, श, य, ज, जैसे अक्षरोंके प्रयोगमें

भी कहीं कहीं अन्तर देखा जाता है और 'ख' के स्थानपर 'ष' का प्रयोग तो दोनो प्रतियोंमें बहुलतासे उपलब्ध होता है, जो प्रायः लेखकोंकी लेखन-शैलीका ही परिणाम जान पड़ता है। अस्तु।

उक्त दोनों ग्रंथप्रतियोंमें 'दोहा-वर्णित' विषयों का निर्देश दोहेके ऊपर गद्यमें दिया हुआ है, परन्तु एक एक दोहेमें कई कई विषयोंका समावेश होनेसे कभी कभी साधारण पाठकको यह मालूम करना कठिन हो जाता है कि कौन नाम किस विषयकी कोटिमें आता है। अतः यहाँ दोहेके ऊपर विषयोंका निर्देश न करके दोहेके जिस भागसे किसी विषयके नामोंका प्रारंभ है वहाँ पर क्रमिक अंक लगा कर फुटनोटमें उस विषयका निर्देश कर दिया गया है। इससे विषय और उसके नामोंका सहज हीमें बोध होजाता है।

इस ग्रन्थके संशोधन और सम्पादनमें श्रद्धेय पं०

(विषय-प्रवेश)

[1]तीर्थंकर सर्वज्ञ जिन, भवनासन भगवान।
पुरुषोत्तम आगत सुगत, संकर परम सुजान ॥ ४ ॥
बुद्ध मारजित केवली, वीतराग अरिहंत।
धरमधुरंधर पारगत, जगदीपक जयवंत ॥ ५ ॥
[2]अलख निरंजन निरगुनी, जोतिरूप जगदीस।
अविनासी आनंदमय, अमल अमूरति ईस ॥ ६ ॥
[3]गौर विसद अरजुन धवल, स्वेत सुकल सितवान।
[4]मोख मुकति वैकुंठ सिव, पंचमगति निर्वान X ॥ ७ ॥
[5]सरस्वति भगवति भारती, हंसवाहनी वानि।

---

१ तीर्थंकरनाम २ सिद्धनाम ३ श्वेतवर्णनाम ४ मोक्षनाम।

X नाटक समयसारमें इस नामका निम्न पद्य पाया जाता है:—
सिद्धक्षेत्र त्रिभुवनमुकुट, शिवथल अविचलथान।
मोख मुकति वैकुंठ शिव, पंचमगति निरवान ॥४२॥

५ सरस्वतीनाम।

वाकवादनी सारदा, मतिविकासनी जानि ॥८॥
[6]सुरग सुरालय नाक दिव, देवलोक सुरधाम।
[7]पुहकर गगन विहाय नभ, अंतरीच्छ आकास* ॥९॥
[8]त्रिदस विबुध पावकवदन, अमर अजर असुरारि।
आदितेय सुर देवता, सुमनस अंबरचारि ॥१०॥
[9]प्रजानाथ वेधा द्रुहिन, कमलासन लोकेस।
धातृ विधाता चतुर्मुख, विधि विरंचि देवेस ॥११॥
[10]नारायन वसुदेवसुत, दामोदर गोपीस।
अचुत त्रिविक्रम चतुर्भुज, वनमाली जगदीस ॥१२॥
मधुरिपु वलिरिपु वानरिपु, दानवदलन मुरारि।
कंसविधंसन पीतपट, कैटभारि नरकारि ॥१३॥

६ देवलोकनाम ७ आकाशनाम।
* नाटक समयसारमें इस नामका निम्न पद्य पाया जाता है:—
खं विहाय अंबर गगन, अंतरिच्छ जगधाम।
व्योम वियत नभ मेघपथ, ये अकासके नाम ॥३८॥
८ देवनाम ९ ब्रह्मानाम १० विष्णु (कृष्ण) नाम।

केसव कृष्ण मुकुंद अज, अंबुजनैन अनंत ।
वासुदेव बलबंधु सिव, रमन राधिकाकंत ॥१४॥
पदमनाभि पदमारमन, गरुडासन गोपाल ।
पुरुषोत्तम गोविंद हरि, जलसाई नँदलाल ॥१५॥
मुरलीधर सारंगधर, संख-चक्रधर स्याम ।
सौरि गदाधर गिरिधरन, देवकिनंदन नाम ॥१६॥
[११] रमा लच्छि पदमालया, लोकजननि हरिनारि ।
कमला पदमा इंदरा, छीरसमुद्र-कुमारि ॥१७॥
[१२] कामपाल रेवतिरमन, रोहिनिनंदन नाम ।
नीलवसन मुसली हली, सीरपानि बलनाम ॥१८॥
[१३] सतवादी धरमातमज, सोमवंस-राजान ।
[१४] भीम वृकोदर पवनसुत, कीचकरिपु बलवान ॥१९॥
[१५] जिष्णु धनंजय फालुगुन, करनहरन कपिकेत ।

---

११ लक्ष्मीनाम १२ बलभद्रनाम १३ युधिष्ठिरनाम १४ भीमनाम १५ अर्जुननाम ।

असुरदलन गांडीवधर, इंद्रतनुज हयसेत ॥२०॥
१६ शंभु त्रिलोचन गौरिपति, हर पसुपति त्रिपुरारि ।
मनमथहरन पिनाककर, नीलकंठ विषधारि ॥२१॥
वामदेव भूतेस भव, रुंडमालधर ईस ।
जटाजूट कपालधर, महादेव सिखरीस ॥२२॥
ससिसेखर सितिकंठ सिव, अंधकरिपु ईसान ।
सूली संकर गंगधर, वृषभकेतु वृषजान ॥२३॥
१७ उमा अंबिका चंडिका, काली सिवा भवानि ।
गौरि पार्वती मंगला, हिमगिरितनया जान ॥२४॥
१८ गनप विनायक गजबदन, लंबोदर वरदानि ।
१९ षडमुख अगिनिकुमार गुह, सिखिवाहन सेनानि ॥२५॥
२० इंद्र पुरंदर वज्रधर, आखंडल अमरेस ।
घनवाहन पुरहूत हरि, सहसनैन नाकेस ॥२६॥

---

१६ महादेवनाम १७ पार्वतीनाम १८ गणेशनाम १९ स्वामिकार्तिकेयनाम २० इन्द्रनाम ।

[21]इंद्रपुरी अमरावती, [22]सभा सुधर्मा नाम।
[23]इंद्रानी सु-पुलोमजा, सची अमरपतिबाम ॥२७॥
[24]कल्पवृच्छ संतानद्रुम, पारिजात मंदार।
हरिचंदन ए पंचसुर-तरु नंदनकंनार ॥२८॥
[25]प्रथम सुपद्म महापद्म, कंद मुकुंद खरच्छ।
संख नील कच्छ पद्मकर, ए नवनिधि सुरदच्छ ॥२९॥
[26]देवबृता च तिलोत्तमा, मेनक उरवसि रंभ।
[27]सुधा अमृत पीयूष रस, जराहरन सुरअंभ ॥३०॥
[28]सुरगिरि गिरिपति हेमगिरि, धरनीधरन सुमेरु।
[29]राजराज वैश्रवन तह, धनपति धनद कुबेर ॥३१॥
[30]अभ्र मेघ घनमाल घन, धाराधर जलधार।
कंद देव दामिनिअधिप, वारिवाह नभचारि ॥३२॥

---

२१ इन्द्रपुरीनाम २२ इन्द्रसभानाम २४ देववृक्षनाम २५ नवनिधिनाम २६ अप्सरा (देवांगना) नाम २७ अमृतनाम २८ सुमेरुपर्वतनाम २९ कुबेरनाम ३० मेघनाम।

धूमजोनि जीमूत घन, पावकरिपु पयदान।
[31]संपा छनरुचि चंचला, चपला दामिनि जान ॥३३॥
[32]हाहा हूहू किंपुरुष, विद्याधर गंधर्व।
अप्सर यक्ष तुरंगमुख, देवयोनि ए सर्व ॥३४॥
[33]जातुधान दानव दनुज, राक्षस देव-विपक्ष।
दितिनंदन मानुषभखन, असुर निसाचर जक्ख ॥३५॥
[34]हरित ककुभ आसा दिसा, [35]सुरपति पावक काल।
नैरित वरुन पवन धनद, ईस आठ दिकपाल ॥३६॥
[36]दच्छिन नैरित वारुनी, वायु उत्तर ईसान।
पूरब पावक अध उरध, ए दस दिसि अभिधान ॥३७॥
[37]दिग्गज ऐरावत कुमुद, पुहुपदंत पुँडरीक।
अंजन सारवभौम तह, वामन सूपरतीक ॥३८॥

---

३१ बिजलीनाम ३२ गंधर्वनाम ३३ दैत्य (राक्षस) नाम ३४ दिशानाम ३५ अष्टदिक्पालनाम ३६ दशादिशानाम ३७ अष्ट दिग्गजनाम।

३८सूर विभाकर घामनिधि, सहसकिरन हरि हंस ।
मारतंड दिनमनि तरनि, आदित आतप-अंस ॥३९॥
सविता मित्र पतंग रवि, तपन हेलि भग भान ।
जगतविलोचन कमलहित, तिमरहरन निगमान ॥४०॥
३९इंदु छपाकर चंद्रमा, कुमुदबंधु मृगअंक ।
औषधीस राहिनिरमन, निसमनि सोम ससांक ॥४१॥
चन्द्र कलानिधि नखतपति, हरिराजा हिमभान ।
सुधासूत द्विजराज विधु, छीरसिंधुसुत जान ॥४२॥
४०उडुगन भानि नछत्र ग्रह, रिक्ख तारका तार ।
४१सीतल सिसिर तुषार हिम, तुहिन सीत नीहार ॥४३॥
४२मलिन मलीमसि कालिमा, लंछन अंक कलंक ।
४३छाम छुधित दुर्बल दुखित, दीन हीन कृश रंक ॥४४॥
४४विभा मयूख मरीचिका, जोति कांति महधाम ।

३८ सूर्यनाम ३९ चन्द्रनाम ४० नछत्रनाम ४१ तुषारनाम ४२ कलंक नाम ४३ दुर्बलनाम ४४ किरणनाम ।

पाद अंसु दीधिति किरनि, भानुतेज रुचि नाम ॥४५॥
[४५]जीव वृहस्पति देवगुरु, [४६]रौहिनेय बुध सौम।
[४७]मंद सनीचर रवितनय, [४८]भूसुत मंगल भौम ॥४६॥
[४९/१]अगिनि धनंजय पवनहित, पावक अनल हुतास।
ज्वलन विभावसु सिखि दहन [४९/२]वडवा उदधिनिवास ॥४७
[५०]पवन प्रभंजन गंधवह, अनिल वात पवमान।
मारुत मरुत समीर हरि, पावकहित नभस्वान ॥४८॥
[५१]जमुनीबंधव समन हरि, धरमराज जम काल*।

---

४५ वृहस्पतिनाम ४६ बुध(ग्रह)नाम ४७शनिश्चरनाम ४८ मंगलनाम [४९/१] अग्निनाम [४९/२] वडवानलनाम ५० वायुनाम ५१ यमराजनाम।

* इस नामका नाटक समयसारमें निम्न जाता है:--

जम कृतांत अंतक त्रिदस, आवर्ती मृतथान।
प्रानहरन आदिततनय, काल नाम परवान ॥

[५२] उल्बन दारुन भयकरन, घोर तिगम त्रिकराल ॥४९॥
[५३] दिवा दिवस बासर सुदिन, [५४] रजनी निसा त्रिजाम ।
जामिनि छपा विभावरी, तमी तामसी नाम ॥५०॥
[५५] सिंधु समुद सरिताधिपति, अंबुधि पारावार ।
अकूपार सागर उदधि, जलनिधि रतनागार ॥५१॥
[५६] सलिल उदक जीवन भुवन, अंबु वारि विष नीर ।
अमृत पाथ वन तोय पय, अंभ आप जल क्षीर ॥५२॥
[५७] अवलि तरंग कलोल विचि, भंग [५८] पालि जलबांद ।
अवधि सीम उपकंठ तट, कूल रोध मरजाद ॥५३॥
[५९] कमल तामरस कोकनद, पंकज पदम सरोज ।
कंज नलिन अरविंद सित, पुंडरीक अंभोज ॥५४॥
[६०] इंदीवर नीलोतपल, पुहुकर [६१] नाल मृनाल ।

---

५२ भयानकनाम ५३ दिवसनाम ५४ रात्रिनाम ५५ समुद्रनाम ५६ जलनाम ५७ तरंगनाम ५८ तटनाम ५९ कमलनाम ६० नीलकमलनाम ६१ मृणाल(कमलनाल)नाम।

[६२]ससिविकास कैरव कुमुद, [६३]ह्रद सरसी सर ताल॥५५॥
[६४]मकर तिमंगल वारिचर, प्रथुरोमा षडलीन।
तिमि जलजंतु विसारि झष, सफरी रोहित मीन॥५६॥
[६५]पावन पूत पवित्र सुचि, [६६]अवलंबन आधार।
[६७] कुंभ कलस भृंगार घट. [६८]गरभ कोस भंडार॥५७॥
[६९]हीरा मानिक नीलमणि, पद्मराग गोमेद।
मरकत मुकत प्रवाल तह, वैडूरज नवभेद॥५८॥
[७०]कंबु संख [७१]कच्छप कमठ. [७२]दादुर मिंडक भेक।
[७३]प्रचुर प्रभूत सुबहुल बहु, अगनित भूरि अनेक॥५९॥
[७४]लच्छि धनंतरि कौसतुभ, रंभा इंद्रतुरंग।
पारिजात विष चंद्रमा, कामधेनु सारंग॥६०॥

६२ कुमुदनाम ६३ सरोवरनाम ६४ मत्स्यनाम ६५ पवित्रनाम ६६ आधारनाम ६७ घटनाम ६८ भंडारनाम ६९ नवरत्ननाम ७० शंखनाम ७१ कच्छपनाम ७२ मेंडकनाम ७३ बहुतनाम ७४ चौदह रत्ननाम।

सुरा संख पीयूषरस, ऐरावत-गज सार ।
सिंधु-मथन करि प्रगट किय, चौदह रतन उदार ॥६१॥
७५वनिक सेठ गाडा(था)धिपति, व्यवहारी धनवान ।
७५नाव पोत प्रोहन तरन, बोहित वाहन जान ॥६२॥
७६देवसरित मंदाकिनी, गगनवाहिनी गंग ।
७७त्रिपथगमनि भागीरथी, सिवतिय धवलतरंग ॥६३॥
७८सरिता धुनी तरंगिनी, नदी आपगा नाम ।
७९कालिंदी रविनंदनी, जमुना हरिविश्राम ॥६४॥
८०भूमि रसा छिति मेदिनी, छोणी छमा जगत्ति ।
अवनि अनंता कुंभिनी, गोधरनी वसुमत्ति ॥६५॥
अचला इला वसुंधरा, धरा मही धर सेस ।
८१भुवन लोक संसार जग, ८२जनपद विषय सुदेस ॥६६॥

---

७५ व्यापारी तथा जहाजके नाम ७६ आकाशगंगानाम ७७ भूमिगंगानाम ७८ सामान्यनदीनाम ७९ यमुनानदीनाम ८० पृथ्वीनाम ८१ लोकनाम ८२ देशनाम ।

[८३]पंसु रेनु रज धूलि तह, [८४]परिष पंक जंबाल ।
[८५]किंचित तुच्छ मनाक तनु, [८६]दीरघ लंब बिसाल ॥६७॥
[८७]संनिधि पास समीप अभि, निकट निरंतर लग्ग ।
[८८]अंतर दूरि निरापरम, [८९]सरनि पंथ पथ मग्ग ॥६८॥
[९०]पन्नगलोक पतालपुर, अधोभवन बलिधाम ।
[९१]सुषिर कुहिर रंधर बिवर, [९२]अवट कूप बिलनाम ॥६९
[९३]वासुकि शेष सहस्रफनि, पन्नगराज बखान ।
[९४]गरल हलाहल प्राणहर, कालकूट विष जान ॥७०॥
[९५]काकोदर विषधर फनी, अहि भुजंग हरहार ।
लेलिहान पन्नग उरग, भोगी पवनाधार ॥७१॥
[९६]निरय नरक कुंभीगवन, दुरगति दुःखनिधान ।

---

८३ धूलिनाम ८४ कीचड़नाम ८५ तुच्छनाम ८६ दीर्घनाम ८७ समीप (निकट) नाम ८८ दूरनाम ८९ मार्गनाम ९० पातालनाम ९१ बिलनाम ९२ कूपनाम ९३ शेषनागनाम ९४ विषनाम ९५ सर्पनाम ९६ नरकनाम।

[९७]बंध फंध शृंखल निगड, जंत पास संदान ॥७२॥

[९८]कलिल कलुष दहकृत दुरित, एन अंध अघ पाप*।

[९९]पीड़ा बाधा वेदना, विथा दुःख संताप ॥७३॥

[१००]मानुष मानव मनुज जन, पुरुष नृ गाध पुमान।

[१०१]विभु नेता पति अधिप इन, नाथ ईस ईसान ॥७४॥

[१०२]प्रमदा ललना नायका, जुवति अङ्गना वाम।

जोषा जोषित सुंदरी, वधू भामिनी भाम ॥७५॥

महिला रमनी कामनी, वामलोचना वाम।

वनिता नारि नितंबिनी, बाला अबला नाम ॥७६॥

[१०३]जाया घरनि कलत्र त्रिय, भार्या पतनी दार।

---

९७ बंधननाम ९८ पापनाम।

*नाटक समयसारमें इस नामका निम्नपद्य पाया जाता है:—

पाप अधोमुख एन अघ, कंपरोग दुखधाम।

कलिल कलुम किल्विम दुरित, अशुभ करमके नाम ॥ ४१ ॥

९९ वेदनानाम १०० मनुष्यनाम १०१ स्वामिनाम १०२ स्त्रीनाम १०३ विवाहितास्त्रीनाम।

[104]दयित कंत वल्लभ रमन, धव कामुक भरतार ॥७७॥
[105]पतिव्रति एकपती सती, कुलवंती कुलबाल ।
[106]दूती कुटनी संफली, [107]सखी सहचरी आलि ॥७८॥
[108]गनिका रूपाजीविका, निरलज्जा पुरनारि ।
वारंगना विलासिनी, सर्ववल्लभा दारि ॥७९॥
[109]सहचर सखा सहाइ हित, संगत सुहृद सखित्र ।
[110]रिपु खल वैरि अराति अरि, दुर्जन अहित अमित्त ।८०
[111]जनक तात सविता पिता, [112]प्रसवति जननी मात ।
[113]पुत्र सूनु अंगज तनय, सुत नंदन तनुजात ॥८१॥
[114]भ्रात्रिजानि भगनी स्वसा, [115]बंधु सहोदर जात ।

---

१०४ भर्तारनाम १०५ सती स्त्रीनाम १०६ कुट्टिनी (कुल्टा)स्त्रीनाम १०७ सखीनाम १०८ वेश्यानाम १०९ मित्रनाम ११०शत्रुनाम १११ पितानाम १२मातानाम ११३ पुत्रनाम १४ बहिननाम ११५ सगे भाईकेनाम ।

[116]अवरज अनुज कनिष्ट लघु, [117]वीर सुबंधव भ्रात ८२

[118]मुनि भिक्षुक तापस तपा, जोगी जती महंत * ।

व्रती साधु ऋषि संयमी, [119]आगम ग्रंथ सिद्धंत ।८३।

[120]उपदेशक उवझाय गुरु, आचारज गुनरासि ।

[121]राजसूय नृपयज्ञ क्रतु, [122]दीक्षित अंतेवासि ।८४।

[123]विबुध सूरि पंडित सुधी, कवि कोविद विद्वान ।

कुसल विचक्षन निपुन पटु, क्षम प्रवीन धीमान †८५

---

११६ छोटे भाईकेनाम ११७ बाँधव नाम ११८ साधुनाम ।

*नाटक समयसारमें इस नामका निम्न पद्य पाया जाता है:—

मुनि महंत तापस तपी, भिच्छुक चारितधाम ।

जती तपोधन संयमी, व्रती साधु ऋषि नाम ॥४६॥

११९ शास्त्रनाम १२० गुरुनाम १२१ राजयज्ञनाम १२२ शिष्यनाम १२३ पंडितनाम

† इस नामके नाटक समयसारमें निम्न दो पद्य पाये जाते हैं:-

निपुन विचच्छन विबुध बुध, विद्याधर विद्वान ।

पटु प्रवीन पंडित चतुर, सुधी, सुजन मतिमान ॥४४॥

[124]आदिबरन भूदेव द्विज, बाँमन विप्र सुजान।
[125]अभिजन संतति गोत कुल, बरग बंस संतान ॥८६॥
[126]मूरख मूक अजान जड़, मंद मूढ सठ बाल।
[127]कुत्सित पामर निरधनी, अधम नीच चंडाल ॥८७॥
[128]दाता दानि दरिद्रहर, [129]कृपन लुबध कीनास।
[130]अनुजीवी अनुचर अनुग, सेवक किंकर दास॥८८॥
[131]सुन्दर सुभग मनोहरन, कल मंजुल कमनीय।
रुचिर चारु अभिराम वर, दरसनीय रमनीय॥८९॥
[132]तसकर निसचर गूढनर, [133]भिल्ल पुलिंद किरात।
[134]दूत चारुचर [135]पिसुन खल, [136]असनि वज्र निर्घात

कलावंत कोविद कुसल, सुमन दच्छ धीमंत।
ज्ञाता सज्जन ब्रह्मविद्, तज्ञ गुनीजन संत ॥४४॥

१२४ ब्राह्मणनाम १२५ कुलनाम १२६ मूर्खनाम १२७ अधमनाम १२८ दातारनाम १२९ कृपणनाम १३० सेवकनाम १३१ सुन्दरनाम १३२ चोरनाम १३३ भीलनाम १३४ दूतनाम १३५ दुष्टनाम १३६ वज्रनाम।

[137]मन मानस अंतःकरन, हृदय चेत चित जानि ।
[138]जीव हंस चेतन अलख, जंतु भूत जन प्रानि ॥९१॥
[139]वृद्ध पलिततनु थविरनर, [140]जुवजन तरुन रसाल ।
[141]सावक दारक पाक प्रथु, डिंभ पोत सिसु बाल॥९२॥
[142]काय कलेवर संहनन, मूरति उपघन गात ।
विग्रह देह सरीर वपु, पंचभूतसंजात ॥९३॥
[143]रुधिर रकत सोणित छतज, [144]पिसित तरस पल मांस
[145]विष्ठा गूथ पुरीष मल, [146]बीज रेत बल अंस ॥९४॥
[147]सीस मुंड उतमंग सिर, [148]अलिक ललाट सुभाल ।
[149]कंठ सिरोधर ग्रीव गल, [150]चिकुर केस कच बाल ।९५

---

१३७ मननाम १३८ जीवनाम १३९ वृद्धपुरुषनाम १४० युवानाम १४१ बालकनाम १४२ शरीरनाम १४३ रुधिरनाम १४४ मांसनाम १४५ मलनाम १४६ वीर्यनाम १४७ शिरनाम १४८ मस्तकनाम १४९ कंठनाम १५० बालनाम ।

[१५१]नैन विलोचन चक्षु दृग, [१५२]पलक [१५३]भोह भ्रुव जानि।
[१५४]वदन तुंड आनन लपन, [१५५]वचन सबद रव बानि९६
[१५६]दंत दसन रादक रदन, [१५७]नासि नासिका घ्रान।
[१५८]अधर दंतपट रदनछद, [१५९]श्रोत श्रवन श्रुति कान।९७।
[१६०]गंड कपोल [१६१]सुवक्ष उर, [१६२]कुच उरोज पयदानि
[१६३]उदर जठर [१६४]कटि श्रोणि कट [१६५]भुजा बाहु [१६६]कर पानि
[१६७]तारक गोलक पूतली, [१६८]दिष्टि अपांग कटाख।
[१६९]अंजन कज्जल रागगज, [१७०]अंगुलिका करसाख।९९
[१७१]ऊरु जानु जंघा जघन, [१७२]अंह्रि चरन पद पाय।

---

१५१ नेत्रनाम १५२ पलकनाम १५१ भौंहनाम १५४ मुखनाम ३५५ वचननाम १५६ दाँतनाम १५७ नासिकानाम १५८ ओष्ठनाम १५९ कर्णनाम १६० कपोल-नाम १६१ छातीनाम १६२ स्तननाम १६३ पेटनाम १६४ कमरनाम १६५ भुजानाम १६६ हस्तनाम १६७ पुतली नाम १६८ कटाक्षनाम १६९ काजलनाम १७० अंगुरीनाम १७१ जांघनाम १७२ पैर (पाद) नाम ।

[१७३]कबरी चूडा धमिल सिख, बैनी कचसमुदाय ॥१००॥
[१७४]सदन गेह आलय निलय, मंदिर भवन आवास ।
साल सरन आगार गृह, धाम निकेत निवास ॥१०१
[१७५]सौध राजगृह धवलगृह, [१७६]नगर पटन पुर ग्राम ।
[१७७]खेय खात परिखा गरत, [१७८]उपकानन आराम ।१०२
[१७९]सुरमंडप देवायतन, चैत्यालय प्रासाद ।
[१८०]तांडव नाटक नृत्य तह, [१८१]गीत गान सुर नाद १०३
[१८२]षडज ऋषभ गंधार पुनि, पंचम मध्यम जान ।
धैवत रूप निषाद तह, ए सुर सात वखानि ॥१०४॥
[१८३]करुना कौतुक भयकरन, वीर हास सिंगार ।
सांत रुद्र बीभत्स तह, ए नवरस संसार ॥१०५॥

---

१७३ चोटीनाम १७४ घरनाम १७५ राजगृहनाम १७६ नगरनाम १७७ खाईनाम १७८ बागनाम १७९ मंदिरनाम १८० नृत्यनाम १८१ गीतनाम १८२ सप्तस्वरनाम १८३ नवरसनाम ।

[१८४] आमल तिक्त कषाय कटु, क्षार मधुर रस जान ।
[१८५] ग्रीषम पावस सरद हिम, सिसिर बसंत बखान १०६
[१८६] उद्वर्तन मंजन कुसुम, चंदनलेपशरीर ।
अलकावलि मसिबिंदु तह, कजल कंचुकी चीर १०७
कुंकुम खौरि तँबोलमुख, चंदनजावक लज्ज।
दसनसुरंगित चातुरी, ए षोडस तियसज्ज ॥१०८॥
[१८७] कंकन किंकिनि कंठमनि, कुंडल वेसरि आढ ।
नूपुर हार स-मुद्रिका, बिछिआ्क जेहरि टाड ॥१०९॥
[१८८] मीनकेतु मनसिज मदन, मार काम मनमत्थ ।
संबरहरन अनंग रति,-रमन पंचसरहत्थ ॥११०॥
[१८९] बसीकरन मोहन तपन, उच्चाटन उन्माद ।
[१९०] तंती दुंदुभि संखधुनि, कंस ताल करवाद ॥१११॥

---

१८४ षट्रसनाम १८५ छहऋतुनाम १८६ सोलहशृंगार नाम १८७ द्वादश आभरणनाम १८८ कामनाम १८९ कामपंचबाणनाम १९० पंचशब्दनाम ।

[१९१]कौतूहल कौतुक अहो, अदभुत चित्र अचंभ।
[१९२]माया कैतव छद्म छल, व्याज कपट मिष दंभ ११२
[१९३]हरष तोष आनंद मुद, [१९४]अमरष कोप सरोस।
[१९५]कृपा सुहित करुना दया, अनुकंपा अनुकोस॥११३॥
[१९६]प्रेम प्रीति अभिलाष सुख, राग नेह संजोग।
[१९७]विछुरन फुल्लक विरह दुख, मनमथविथा वियोग॥११४
[१९८]त्याग विहाइत दान दत, [१९९]समता हित सुख सात।
[२००]गुन श्रुति कीर्ति उदाहरन, जस सलोक अवदात॥११५
[२०१]प्रकट साधु सुविदित विसद, [२०२]निरुपम अकथ अनूप
[२०३]मंद बिलंबित सिथिल तह, [२०४]छाँह बिंब प्रतिरूप ११६

---

१९१ कौतुकनाम १९२ कपटनाम १९३ आनंदनाम १९४ कोपनाम १९५दयानाम १९६ प्रीतिनाम १९७विरहनाम १९८ दाननाम १९९ सुखनाम २०० कीर्तिनाम २०१ प्रकटनाम २०२ अनुपमनाम २०३ विलम्बनाम २०४ छायानाम

[२०५]तुल्य सवर्ण सधर्म सम, सदृस सरूप समान ।
[२०६]जुगत संसक्त सहित जुत, [२०७]नाम गोत अभिधान ।।
[२०८]प्रतिदिन नित संतत सदा, [२०९]नूतन नव सुनवीन ।
[२१०]प्राकृत जीरन सुचिर तनु, जरठ पुरातन छीन ।।११८।।
[२११]करकस कठिन कठोर दिढ़, निठुर परुष अस्लील ।
[२१२]कोमल पेसल नरम मृदु, [२१३]प्रकृति स्वभाव सुसील ।।
[२१४]बुद्धि मनीषा सेमुषी, धी मेधा मति ग्यान ।*
[२१५]भावक मंगल कुसल सिव, भविक छेम कल्यान ।।१२०
[२१६]छिप्र वेग सहसा तुरत, झटित आसु लघु जान ।

---

२०५ समाननाम २०६ युक्तनाम २०७ नाम- नाम २०८ सदानाम २०९ नूतन नाम २१० पुरातननाम २११ कठिन-नाम २१२ कोमलनाम २१३ स्वभावनाम २१४ बुद्धिनाम ।

*नाटक समयसारमें इस नामका निम्न पद्य है:—

प्रज्ञा धिसना सेमुसी, धी मेधा मति बुद्धि ।
सुरति मनीषा चेतना, आशय अंश विसुद्धि ।। ४३ ।।

२१५ कल्याणनाम २१६ शीघ्रनाम ।

२१७तरल अथिर चंचल सुचल, चपल विलोल बखान।१२१
२१८अहंकार अविनय गरव, उन्नतगल अभिमान।
२१९अंधकार संतमस तम, धूमर तिमिर भयान ॥१२२॥
२२०गउर पीत कंचनवरन, २२१रक्त सुलोहित लाल।
२२२हरित नील पालास तह, २२३स्याम भृंगरुचि काल।१२३
२२४असन भोग आहार भख, २२५लीला केलि विलास।
२२६विधुर कृछ्र संकट गहन, २२७व्रत संजम उपवास।१२४
२२८मृषा अलीक मुधा विफल, वृथा वितथ मिथ्यात ×।
२२९अंत विनास निधन मरन, पंचत प्रलय निपात ॥१२५॥

२१७ चंचलनाम २१८ अभिमाननाम २१९ अंधकारनाम २२० पीतवर्णनाम २२ रक्तवर्णनाम २२२ हरितवर्णनाम २२ श्यामवर्णनाम २२४ आहारनाम २२५क्रीड़ानाम २२६कष्टनाम २२७व्रतनाम २२८असत्यनाम।

× अजथारथ मिथ्या मृषा, वृथा असत्त अलीक।
मुघा मोघ निष्फल वितथ, अनुचित असत अठीक (ना.स.)

२२९ मरणनाम।

[230]प्रस्तर उपल पषान दृष, [231]भूदारन हल सीर।
[232]हयँगवीन सर्पी घिरत, [233]दुग्ध अमृत पय छीर।१२६
[234]अरथ वित्त वसु द्रविन धन X [235]सुरा वारुनी हाल।
मधु मदिरा कादंबरी, सांधु मद्य कीलाल॥१२७॥
[236]हाटक हेम हिरण्य हरि, कंचन कनक सुवर्ण।
[237]जातरूप कलधौत तह, रजत रूप शुचिवर्ण॥१२८॥
[238]भूषन मंडन आभरन, अलंकार तनभाल।
[239]अंसुक निवसन चीर पट, चीवर अंबर छाल॥१२९॥
[240]गंधसार चंदन मलय, [241]हिम कपूर घनसार।

---

२३० पाषाणनाम २३१ हलनाम २३२ घृतनाम २३३ दुग्धनाम २३४ धननाम।

X भाव पदारथ समय धन, तत्त्व वित्त वसु दर्व।
द्रविन अरथ इत्यादि बहु, वस्तुनाम ये सर्व (ना. स.)

२३५ मदिरानाम २३६ सुवर्णनाम २३७ रजतनाम २३८ आभरणनाम २३९ वस्त्रनाम २४० चन्दननाम २४१ कपूरनाम।

[२४२]नाभिज मृगमद कस्तुरी, कुंकुम रकतागार ॥१३०॥
[२४३]सयन मंच परयंक तह, [२४४]सेज तलप उपधान ।
[२४५]दरपन मुकुर सुआदरस, [२४६]छायाकरन वितान ॥१३१
[२४७]मुकट किरीट सिरोरतन, [२४८]आतपत्र सिरछत्र ।
[२४९]पद सिंहासन पीठ तह, [२५०]हेति सुआयुध अस्त्र ॥१३२
[२५१]भूप महीपति छत्रधर, मंडलेस राजान ।
[२५२]चक्री सारवभौमनृप, [२५३]मंत्री सचिव प्रधान ॥१३३॥
[२५४]सेव निषेव उपासना, [२५५]शासन पुहुप (?) निदेस ।
[२५६]भाग पुन्य सुविहित सुकृत*, [२५७]सकल खंड लव लेस

---

२४२ कस्तूरीनाम २४३ पलंगनाम २४४ शय्यानाम २४५ दर्पणनाम २४६ चंदोवानाम २४७ मुकुटनाम २४८ छत्रनाम २४९ सिंहासननाम २५० अस्त्रनाम । २५१ राजानाम २५२ चक्रवर्तिनाम २५३ मंत्रीनाम २५४सेवानाम २५५आज्ञानाम २५६पुण्यनाम २५७खंडनाम

*इस नामका नाटक समयसारमें निम्न पद्य पाया जाता है:—

[२५८]महिषी पट्टनिवासिनी, [२५९]पुररखवाल तलार ।
[२६०]षंढ नपुंसक कंचुकी, [२६१]द्वारपाल प्रतिहार ॥१३५॥
[२६२]पौर लोक नागर प्रजा, [२६३]साल दुर्ग प्राकार ।
[२६४]पंथनिरोध कपाट पट, [२६५]गोमुख नगरदुवार ॥१३६॥
[२६६]जाल गवाख' समीरपथ, [२६७]ऊर्द्धपंथ सोपान ।
[२६८]वंक विषम अंकुल कुटिल, [२६९]कुंडल मंडल जान १३७
[२७०]तालपत्र कुंडल श्रवण, सिरबंधन सिंदूर ।
पान वलय कंकन कटक, बाँहरक्ख केयूर ॥१३८॥

पुण्य सुकृत ऊरधवदन, अकररोग शुभकर्म ।
सुखदायक संसारफल, भाग बहिर्मुख धर्म ॥॥४०॥

२५८ रानीनाम २५९ कोटपालनाम २६० खोजानाम २६१ द्वारपालनाम २६२ प्रजानाम २६३ कोटनाम २६४ किवाड़नाम २६५ द्वारनाम २६६ झरोखा (खिड़की) नाम २६७ सीढ़ीनाम २६८ वक्र (टेढ़ा) नाम २६९ घेरेके नाम २७० अङ्गभूषण नाम ।

तुला कोटि नूपुर चरन, भाल सुतिलक ललाभ।
कटि किंकिनि मेखल रसन, छुद्र घंटिका नाम ॥१३९॥
२७१ बल अनीक सेना चमू, कटक बाहिनी दंड।
२७२ चिन्ह पताका केतु ध्वज, बैजयंति तह झंड ॥१४०॥
२७३ सर सायक नाराच खग, बान सिलीमुख कंड।
२७४ धनुष कारमुक चाप धनु, गुनधारन कोदंड ॥१४१॥
२७५ सरवारन कंचुकि कवच, २७६ डर भय त्रास असात।
२७७ असि कृपान करवाल तह, २७८ छत प्रहार संघात १४२
२७९ रन विग्रह संजुग समर, संपराय संग्राम।
कदन आजि संगर कलह, जुद्ध महाहव नाम ॥१४३॥
२८० जाचक मंगत बंदिजन, २८१ रंगभूमि रनखेत।

---

२७१ सेनानाम २७२ ध्वजानाम २७३ बाणनाम २७४ धनुषनाम २७५ जिरह (बख्तर) नाम २७६ भयनाम २७७ तलवारनाम २७८ घावनाम २७९ संग्राम (युद्ध) नाम २८० याचकनाम २८१ रणभूमिनाम।

[282]सूरबीर जोधा सुभट, [283]भूत पिशाच परेत ॥१४४॥
[284]सैल अचल गिरि सिखरि नग, पर्वत भूधर नाम।
[285]देवखात बिल कंदरा, दरी गुफा मुनिधाम ॥१४५॥
[286]पीवर पीन सुथूलगुन, [287]उन्नत उच्च उतंग।
[288]विस्तीरनविस्तर विपुल, [289]अध नचनीच विभंग१४६
[290]कानन विपन अरण्य वन, गहन कक्ष कंतार।
[291]विटपि महीरुह साखि तरु, अग पादप फलधार॥१४७
[292]छदन सुपत्त पलाम दल, [293]पेडमूल जड कंद।
[294]पुहुप प्रसून सुमन कुसुम, [295]मधु पराग मकरंद॥१४८
[296]चूत आम सहकार तरु, सौरभ अंब रसाल।

---

२८२ सुभटनाम २८३ प्रेतनाम २८४ पर्वतनाम २८५ गुफानाम २८६ स्थूलनाम २८७ उतंगनाम २८८ विस्तारनाम २८९ नीचेके नाम २९० वननाम २९१ वृक्ष-नाम २९२ पातनाम २९३ मूल (जड़) नाम २९४ पुष्पनाम २९५ परागनाम २९६ आम्रनाम।

[297]रंभ मोच केला कदलि, [298]मालकार वनपाल ॥१४९

[299]बल्ली वेलि प्रतति लता, [300]वाटिक कुसुम अराम ।

[301]सुरभि सुगंध सुवासना, [302]माल हार स्रज दाम ॥१५०

[303]कंठीरव कुंजरदमन, हरि हरिधिप मृगसूल ।

बली पंचमुख केसरी, सरभ सिंह सार्दूल ॥१५१॥

[304]गज करेनु मातंगधिप, करि वारन सुंडाल ।

सिंधुर दंती नाग इभ, ‡कलभ मतंगजबाल॥१५२॥

[305]अश्व बाजि घोटक तुरग, हरि तुरंग हय वाह ।

[306]ऊँट वेगगामुक करभ, [307]सूकर क्रोड वराह ॥१५३॥

[308]बानर वलिमुख विपनचर, साखामृग कपि कीस ।

[309]सारन हरिन कुरंग मृग, अजिनजोनि एनीस ॥१५४॥

२९७केलानाम २९८मालीनाम २९९लतानाम ३००फुलवारीनाम ३०१ सुगंधनाम ३०२ मालानाम ३०३ सिंहनाम ३०४ हाथी और ‡हाथीके बच्चेके नाम ३०५ अश्वनाम ३०६ऊँटनाम।३०७शूकरनाम ३०८बन्दरनाम ३०९मृगनाम।

[310]धेनु गाय पसु [311]वृषभ सिव, [312]महिषा वाहलुलाय
[313]जंबुक भीरु शृगाल सिव, मृगधूरत गोमाय ॥१५५॥
[314] ऊंदर मूषक नागरिपु, [315]बिल्ला श्रोतु मँजार ।
[316]रासभ गर्दभ रैंकु खर, [317]चर गति गमन विहार १५६
[318]श्वान पुरागत ग्रामहरि, श्वा कूकर दिढककख ।
मारमेय निशि जागरण, मंडल श्रातुविपक्ख ॥१५७॥
[319]श्रोत्र श्रक्ष इंद्रिय करन, [320]कंज विषान सु-सृंग ।
[321]सारंग षट्पद मधुप अलि, भ्रमर सिलीमुख भृंग १५८
[322]सकुनि संकुन पतंग खग, सलभ विहंगम पाक्ख ।
[323]खगपति विनतासुत गरुड, हरिवाहन अहिभक्ख १५९

---

३१० गायनाम ३११ बैलनाम ३१२ भैंसानाम ३१३ शृगालनाम ३१४ मूषकनाम ३१५ बिलाव (बिल्ली) नाम ३१६ गर्दभनाम ३१७ गमन(चाल)नाम ३१८ कूकरनाम ३१९ इन्द्रियनाम ३२० सींगनाम ३२१ भ्रमरनाम ३२२ पक्षिनाम ३२३ गरुड़नाम ।

[324]जीवंजीव चकोर तह, [325]कुरकट तामरचूर ।
[326]केकी अहिरिपु नीलगल, सिखी सिखंडि मयूर १६०
[327]चाखसु खंजन खंजरिट, [328]वायस करट कराल ।
[329]पिक कोकिल तहु[330]कीर सुक, [331]वरट सुहंस मराल
[332]कौसिक पेचक काकरिपु, [333]पिक चातक सारंग ।
[334]पारावत सुकपोत गन, [335]चकवा कोक रथंग ।।१६२।।
[336]पूग समाज समूह व्रज, ओघ संघ संघात ।
जूथ पुंज समवाय कुल, निकर कदंबक व्रात ।।१६३।।
अवलि वृंद संदोह चय, संचय निचय निकाय ।
आली पंकति निवह गन, राजि रासि समुदाय।।१६४।।

---

३२४ चकोरनाम ३२५ कुक्कुटनाम ३२६ मयूरनाम ३२७ ममोला (पक्षिविशेष) नाम ३२८ काकनाम ३२९ कोकिलनाम ३३० तोतानाम ३३१ हंसनाम ३३२ उलूकनाम ३३३ पपीहानाम ३३४ कबूतरनाम ३३५ चकवानाम ३३६ समूहनाम ।

[337]नारिपुरुष दंपति मिथुन, [338]द्वंद जुगम जुग जान।
उभय जुगल जम जमल दु बि, लोचनसंग्य बखान१६५
[339]तीन लोक गुन सिवनयन, [340]चउ जुग बेद उपाय।
[341]पंच बान इंद्रिय सबद, [342]षट रितु रस अलिपाय १६६
[343]सात द्वीप मुनि हय बिसन, [344]आठ धात गिरि सार।
[345]नव ग्रह रस तह [346]सून्य नभ, अनुक्रम अंक विचार
[347]ध्रुव अडोल थावर सुथिर, निश्चल अविचल जान।
[348]दीरघायु चिर आयु तह, चिरंजीव सुबखान ॥१६८॥

(उपसंहार और प्रशस्ति)

होय जहाँ कछु हीन, छंद सबद अच्छर अरथ।
गुनगाहक परवीन, लेहु विचारि सँवारि तह ॥१६९॥

---

३३७ स्त्री-पुरुषसंयोगनाम ३३८ युग (जोड़के) नाम ३३९ तीनके नाम ३४० चारके नाम ३४१ पाँचके नाम ३४२ छहके नाम ३४३ सातके नाम ३४४ आठके नाम ३४५ नौके नाम ३४६ शून्यके नाम ३४७ स्थिरनाम ३४८ चिरंजीवनाम।

मित्र नरोत्तम थान, परम विचक्षण धर्मनिधि ।
तासु वचन परवान,कियो निबंध विचारि मनि ।।१७०।।
सोरहसै सत्तरि समै, असू मास सित पच्छ ।
विजैदसम ससिवार तह, श्रवण नखत परतच्छ ।।१७१।।
दिन दिन तेज प्रताप जय, सदा अखंडित आन ।
पातसाह थिर नूरदी, जहाँगीर सुलतान ।।१७२ ।।
जैन धर्म श्रीमाल कुल, नगर जौनपुर वास ।
खडगसेन-नंदन निपुन, कवि बनारसीदास ।।१७३।।
कुसुमराजि नाना वरन, सुन्दर परम रसाल ।
कोमल-गुनगर्भित रची, नाममाल जैमाल ।।१७४।।
जे नर राखें कंठ निज, होय सुमति परकास ।
भानु सुगुरु परसाद तहँ, परमानंद-विलास ।।१७५।।

❀ इति बनारसी-नाममाला ❀

'नाममाला'का शुद्धिपत्र

दोहा नं०	अशुद्ध	शुद्ध
१३	बानरिपु	बाणरिपु
१७	इंदरा	इंदिरा
१८	कुसली	मुसली
१९	सोमवंसराजान	सोमवंसि राजान
२९	कछपदमकर	कच्छप मकर
३९	घामनिधि	धामनिधि
४३	भानि	भं
४५	महधाम	मह धाम
४७	वडवा	बाडव
६२	सेठ	सेठि
,,	गाडा (था) धिपति	गाह्राधिपति
६९	अधोभवन	अधोभुवन
,,	कुहिर	कुहर
७०	फनि	फन
७३	आंध	आंघ
,,	दहकृत	दुष्कृत

८०	सखित्त	सुमित्त
८२	भ्रात्रिजानि	भातृजानि
,,	बंधु सहोदर जात	वीर सहोदर भ्रात
,,	वीरसु-बंधव भ्रात	बंधु सु-बंधव जात
९०	चारुचर	चार चर
९३	उपधन	अपघन
९६	सबद	सबद
१०८	चंदनजावक	वंदन जावक
११९	सुशील	सु-शील
१३६	गोमुख	गोपुर
१३७	अंकुल	अंकुश
१३८	सिरबंधन	सिर वंदन
,,	पान	पानि
१४२	कंचुकि	कंचुक
१५१	हरिधिप	द्वीपी
१५२	मातंगधिप	मातंग द्विप
१५४	सारन	सारँग
१५५	सिव	वृष
१६१	चारवसु	चाष सु

शब्दानुक्रमकोष

शब्दानुक्रमकोष

बनारसी-नाममालामें जो शब्द प्राकृत या अपभ्रंश भाषाके हैं अथवा इन भाषाओंके शब्दाक्षरोंसे मिश्रित हैं उनके साथ इस कोषमें उनका पूरा संस्कृत-रूप अथवा जिन अक्षरोंके परिवर्तनसे वह रूप बनता है उन अक्षरोंको ही ब्रैकट ( ) के भीतर दे दिया है; जैसे 'अगिनि' के साथ (अग्नि), 'अचुत' के साथ (अच्युत), 'अनुकोस' के साथ (कोश), 'ईस' के साथ (श) लगा दिया है। इससे पाठकोंको दो सुविधाएँ होंगी—एक तो वे उन शब्दोंके संस्कृत रूपको जान सकेंगे, दूसरे आज कलकी हिन्दी भाषामें जो प्रायः संस्कृत शब्दोंका व्यवहार होता है उनके अर्थको भी वे इस कोषपरसे समझ सकेंगे। बाकी अधिकांश शब्द संस्कृत भाषाके ही हैं, कुछ ठेठ हिन्दी तथा प्रान्तिक भी हैं, उन सबको ज्योंका त्यों रहने दिया है। हाँ, ठेठ हिन्दी तथा प्रान्तिक शब्दोंके आगे ब्रैकट [ ] में देशीका सूचक 'दे०' बना दिया है। और सब शब्दोंके स्थानकी सूचना दोहोंके अंकों द्वारा की गई है।

—सम्पादक

शब्दानुक्रमकोष

अ

अकथ (थ्य) ११६
अकूपार ५१
अख १५८
अग १४७
अगनित (णित) ५६
अगिनि (अग्नि) ४७
अगिनि (ग्नि) कुमार २५
अघ ७३
अचल १४५
अचला ६६
अचंभ [दे०] ११२
अचुत (अच्युत) १२
अज १४
अजर १०
अजान (अज्ञान) ८७
अजिनजो(यो)नि १५४
अडोल [दे०] १६८
अथिर (अस्थिर) १२१
अदभुत (द्भु) त ११२
अध ३७, १४६
अधम ८७
अधर ६७
अधिप ७४
अधोभुवन ६६
अनल ४७
अनंग ११०
अनंत १४
अनंता ६५
अनिल ४८
अनीक १४०
अनुकंपा ११३
अनुकोस (क्रोश) ११३
अनुग ८८

अनुचर ८८
अनुज ८२
अनुजीवी ८८
अनूप (अनुपम) ११६
अनेक ५६
अपघन ६३
अपांग ६६
अप्सर ३४
अबला ७६
अभि ६८
अभिजन ८६
अभिधान ११७
अभिमान १२२
अभिराम ८६
अभिलाष ११४
अभ्र ३२
अमर १०
अमरपतिवाम (मा) २७
अमरष (र्ष) ११३
अमरावती २७
अमरेस (श) २६
अमल ६
अमित्त (त्र) ८०
अमूरति (र्ति) ६
अमृत ३०,४२,१२६
अरजुन (अर्जुन) ७
अरण्य १४७
अरथ (र्थ) १२७
अरविंद ५४
अराति ८०
अराम (आराम) १५०
अरि ८०
अरिहंत (अर्हन्) ५
अलकावली १०७

अलग्न ६, ९१
अलंकार १२९
अलि १५९, १६६
अलिक ९५
अलिपाय(द) १६६
अलीक १२५
अवट ६९
अवदान ११५
अवधि ५३
अवनि ६५
अवरज ८२
अवलंबन ५७
अ(आ)वलि ५३, १६४
अ(आ)वास १०१
अविचल १६८
अविनासी(शी) ६
अश्व १५३
असन (अशन) १२४
असनि (अशनि) ९०
असमान १४२
असि १४२
असुर ३५
असुरदलन २०
असुरारि १०
अस्त्र १३२
अस्ली(श्ली)ल ११९
अहंकार १२२
अहि ७१
अहिन ८०
अहिभक्ष्य(भक्ष) १५९
अहिरिपु १६०
अहो ११२
अंक ४४
अंकुस(श) १३७

अंगज ८१
अंगना ७५
अंगुलिका ६६
अंच ७३
अंजन ३८, ६६
अंत १२५
अंतर ६८
अंतरीच्छ ६
अंतःकरन(ण) ६१
अंतेवासि(सी) ६४
अंधकरिपु २३
अंधकार १२२
अंब [दे० = आंब,अंबा] १४६
अंबर १२६
अंबरचारि(री) १०
अंबिका २४
अंबु ५२
अंबुजनैन (नयन) १४
अंबुधि ५१
अंभ ५२
अंभोज ५४
अंस(श) ६४
अंसु(शु) ४५
अंसु(शु)क १२६
अंह्रि (= अंघ्रि) १००

आ

आकास(श) ६
आखंडल २७
आगत (?) ४
आगम ८३
आगार १०१
आचारज(र्य) ८४
आजि १४३
आठ [दे०] १६७

आढ [दे०]	१०६	आराम	१०२
आतपअंसु(शु)	३६	आलय	१०१
आतपत्र	३२१	आलि	७८
आदरस(र्श)	१३१	आली	१६४
आदिति (आदित्य)	३६	आसा (शा)	३६
आदितेय	१०	आसु(शु)	१२१
आन्तिवरण(र्ण)	८६	आहार	१२४
आधार	५७	इ	
आनन	६७	इन	७४
आनंद	११३	इभ	१४२
आनंदमय	६	इला	६६
आप	४२	इंदिरा	१७
आपगा	६४	इंदीवर	४४
आभरण	१२६	इंदु	४१
आम(म्र)	१४६	इंद्र	२६
आमल(म्ल)	१०६	इंद्रतनुज	२०
आयुध	१३२	इंद्रतुरंग	६०

इंद्रपुरी	२७	उदाहरन(ण)	११५
इंद्रानी(णी)	२७	उद्वर्तन	१०७
इंद्रिय	१५८, १६६	उन्नत	१४६
ई		उन्नतगाल	१२२
ईस(श)	६,२२,३६,७४	उन्माद	१११
ईसान(ईशान)	२३,३७,७४	उपकंठ	५३
उ		उपकानन	१०२
उच्च	१४६	उपदेशक	८४
उच्चाटन	१११	उपधान	१३१
उडुगन(ण)	४३	उपल	१२६
उत(त्त)र	३७	उपवास	१२४
उतमंग (उत्तमांग)	८५	उपाय	१६६
उतंग (उत्तुंग)	१४६	उपासना	१३४
उदक	५२	उभय	१६५
उदधि	५१	उमा	२४
उदधिनिवास	४७	उर	६८
उदर	६८	उरग	७१

उरध (ऊर्ध्व) ३७
उरवसि (उर्वशी) ३०
उरोज ६८
उलबन(ण) ४६
उवझाय (उपाध्याय) ८४

ऊ

ऊरु १००
ऊर्द्ध (र्ध्व)पंथ १३७
ऊँट [दे०] १५३
ऊँदर(उन्दरु) १५६

ऋ

ऋषभ १०४
ऋषि ८३

ए

एकपती(त्नी) ७८
एन ७३
एनीस (एणीश) १५४

ऐ

ऐरावत ३८
ऐरावतगज ६१

ओ

ओघ १५३
ओतु १५६

औ

औषधीस(श) ४१

क

ककुभ ३६
कक्ष १४७
कच ६५
कचसमुदाय १००
कच्छप २६, ५६
कजल (कज्जल) १०७
कज्जल ६६
कट (कटि) ६८

कटक	१३८, १४०	कपोल	९८
कटाख(क्ष)	९५	कप्पा(पा)लधर	२२
कटि	९८, १३९	कबरी	१००
कटु	१०६	कमठ	५९
कठिन	११९	कमनीय	८९
कठोर	११९	कमल	५४
कदन	१४३	कमलहित	४०
कदलि(ली)	१४९	कमला	१७
कदंबक	१६३	कमलासन	११
कनक	१२८	कर	९८
कनिष्ठ	८२	करकस(कर्कश)	११९
कपट	११२	करन(ण)	१५८
कपाट	१३६	करनहरन (करणहरण)	२०
कपि	१५४	करभ	१५३
कपिकेत(तु)	२०	करवाद(द्य)	१११
कपूर(कर्पूर)	१३०	करवाल	१४२
कपोत	१६२	करसाख (शाख)	९९

कराल	१६१	कल्यान(ण)	१२०
करि	१५२	कवच	१४२
करुना(णा)	१०५, ११३	कवि	८५
करेनु(णु)	१५२	कषाय	१०६
कल	८१	कस्तु(स्तू)री	१३०
कलत्र	७७	कंकन(ण)	१०६, १३८
कलधौत	१२८	कं(कां)चन	१२८
कलभ	१५२	कं(कां)चनवरन (वर्ण)	१२३
कलस(श)	५७	कंचुक	१४२
कलह	१४३	कंचुकी	१०७, १३५
कलंक	४४	कंज	५४, १५८
कलानिधि	४२	कंठ	६५
कलिल	७३	कंठमनि(णि)	१०६
कलुष	७३	कंठीरव	१५१
कलेवर	६३	कंड (कांड)	१४१
कलोल (कल्लोल)	५३	कंत (कांत)	७७
कल्पवृक्ष	२८	कं(कां)तार	१४७

कंद ३२, १४८
कंदरा १४५
कंबु ५६
कंभ १११
कंसविधुंस(ध्वंस)न १३
कांति ४५
काकरिपु १६२
काकोदर ७१
कादंबरी १२७
कान [दि०] ६७
कानन १४७
काम ११०
कामधेनु ६०
कामपाल १८
कामिनी ७६
कामुक ७७
काय ६३
कारमु(मुं)क १४१
काल ३६, ४६, १२३
कालकूट ७०
कालिमा ४४
कालिंदी ६४
काली २४
किरन(ण) ४५
किरात ६०
किरीट १३२
किंकर ८८
किंकिनि(णि) १०६, १३६
किंचित(त्) ६७
किंपुरुष ३४
कीचकरिपु १६
कीर १६१
कीर्ति ११५
कीनास(श) ८८

कीलाल १२७
कीस(श) १५४
कुच ६८
कुटनी (कुट्टनी) ७८
कुटिल १३७
कुत्सित ८७
कुबेर ३१
कुमुद २८, ४४
कुमुदबन्धु ४१
कुक्कट (कुक्कुट) १६०
कुरंग १५४
कुल ८६, १६३
कुलबाल(ला) ७८
कुलवंती(वती) ७८
कुसल (कुशल) ८५, १२०
कुसुम, १०७, १४८, १५०
कुहर ६६
कुंकुम, १०८, १३०
कुंजरदमन १५१
कुंडल, १०६, १३७, १३८
कुंद २६
कुंभ ५७
कुंभिनी ६५
कुंभोगाव(म)न ७२
कूकर (कुक्कुर) १५७
कूप ६६
कूल ४३
कृच्छ्र १२४
कृपन(ण) ८८
कृपा ११३
कृपान(ण) १४२
कृश ४४
कृष्ण १४
केकी १६०

केतु	१४०	कोविद	८४
केयूर	१३८	कोस(ष)	५७
केला [दे०]	१४६	कौतुक	१०५, ११२
केलि	१२४	कौतूहल	११२
केवली	५	कौसतु(स्तु)भ	६०
केस(श)व	१४	कौसि(शि)क	१६२
केस(श)		क्रतु	८४
केसरी	१५१	क्रोड	१५३
कैटभारि	१३	क्षम	८५
कैतव	११२	क्षिप्र	१२१
कैरव	५५	क्षीर	५२
कोक	१६२	क्षीरसमुद्रकुमारि(री)	१७
कोकनद	५४	क्षीरसिंधुसुत	४२
कोकिल	१६१	**ख**	
कोदंड	१४१	खग,	१४१, १५६
कोप	११३	खगपति	१५६
कोमल	११६	खतमाल	३२

खर	१५६
खरब्ब (र्व)	२६
खल,	८०, ६०
खंजन	१६१
खंजरि(री)ट	१६१
खंड	१३४
खात	१०२
खेय	१०२
खौरि [दे०]	१०८

ग

गउर (गौर)	१२३
गगन	६
गगनवाहिनी	६३
गज	१५२
गजबदन	२५
गति	१५६
गदाधर	१६
गन(ण)	१६४
गन(ण)प	२५
गनि(णि)का	७६
गमन	१५६
गरत (गर्त)	१०२
गरभ (गर्भ)	५७
गरल	७०
गरव (गर्व)	१२२
गरुड	१५६
गरुडासन	१५
गर्दभ	१५६
गल	६५
गवाख(क्ष)	१३६
गहन	१२४, १४७
गंग (गंगा)	६३
गंग(गा)धर	२३
गंड	६८

गंधर्व ३४
गंधवह ४८
गंधसार १३०
गं(गां)धार १०४
गांडीवधर २०
गाहा(गृहा)धिपति ६२
गात (गात्र) ९३
गान १०३
गाय १५५
गिरि १४५, १६७
गिरिधरन(धर) १६
गिरिपति ३१
गीत १०३
गुन(ण) ११२, १६६
गुनधारन (गुणधर) १४१
गुनरासि (गुणराशि) ८४
गुफा (गुहा) १४५
गुरु ८४
गुह २२
गूढनर ९०
गूथ ९४
गृह १०१
गेह १०१
गो ६५
गोत(त्र) ८६, ११७
गोध ७४
गोपाल १५
गोपीस(श) १२
गोपुर १३६
गोमाय(यु) १५५
गोमेद ५८
गोलक ९९
गोविंद १२
गौर ७

गौरि(री) २४
गौरि(री)पति २१
ग्यान (ज्ञान) १२०
ग्रह ४३, १६७
ग्रंथ ८३
ग्राम १०२
ग्रामहरि १५७
ग्रीव (ग्रीवा) ६५
ग्रीषम(ष्म) १०६

घ

घट २७
घन ३२
घनवाहन २६
घनसार १३०
घरनि (गृहिणी) ७७
घिरत(घृत) १२६
घोटक १५३
घोर ४६
घ्रान(ण) ६७

च

चउ (चतु:) १६६
चकवा [दे०] १६२
चकोर १६०
चक्रधर १६
चक्री १३३
चखु ६६
चतुर्भुज ११, १२
चन्द्र ४२
चपल १२१
चपला ३३
चमू १४०
चल १६४
चर ८६, १५६
चरन(ण) १००

चल १२१
चंचल १२१
चंचला ३३
चंडाल ८७
चंडिका २४
चंदन १३०
चंदनलेप शरीर १०७
चंद्रमा ४१, ६०
चातक १६२
चातुरी १०८
चाप १४१
चार ६०
चारु ८६
चाष १६१
चिकुर ६५
चित(त्त) ६१
चित्र ११२
चिन्ह १४०
चिरआयु (चिरायुः) १६८
चिरतनु (चिरंतन) ११८
चिरंजीव १६८
चीर १०७, १२६
चीवर १२६
चूडा १००
चूत १४६
चेत (चेतस्) ६१
चेतन ६१
चैत्यालय १०३

छ

छत (क्षत) १४२
छतज (क्षतज) ६४
छत्रधर १३३
छदन १४८
छदम(झ) ११२
छन(क्षण)रुचि ३३

छुधा (क्षुधा) ५०
छु(क्षु)धाकर ४१
छुमा (क्षमा) ६५
छल ११२
छाम (क्षाम) ४४
छायाकरन (ण) १३१
छार (क्षार) १०६
छाल १२६
छांह (छाया) ११६
छिति (क्षिति) ६५
छीन (क्षीण) ११८
छीर (क्षीर) १२६
छु(क्षु)धित ४४
छु(क्षु)द्रघंटिका १३६
छेम (क्षेम) १२०
छोणी (क्षोणी) ६५

ज

जक्ख (यक्ष) ३५
जग (जगत्) ६६
जगन(न्)त्रिलोचन ४०
जगत्ति (जगती) ६५
जगदीपक ५
जगदीस(श) ६,१२
जघन १००
जटाजूट २२
जठर ६८
जड ८७,१४८
जती (यति) ८३
जन ७४,६१
जनक ८१
जननी ८१
जनपद ६६
जम (यम) ४६,१६५

ज(य)मल १६५
जमुना (यमुना) ६४
जमुनीबंधब(यमुनाबांधव)४६
जयवंत [द्वि०] ५
जरठ ११८
जराहरन(ण) ३०
जल ५२
जलजंतु ५६
जलधर ३२
जलनिधि ५१
जलबांद ५३
जलसाई(शायी) १५
जस (यश) ११५
जंघा १००
जंत (यंत्र) ७२
जंतु ६१
जंबाल ६७
जंबुक १५५
ला(या)चक १४४
जाल १३७
जातरूप १२८
जा(या)तुधान ६५
जान (यान) ६२
जानु १००
जामिनि (यामिनी) ५०
जाया ७७
जा(या)वक १०८
जिन ४
जिष्णु २०
जीमूत २३
जीरन (जीर्ण) ११८
जीव ४६, ६१
जीवन ५२
जीवंजीव १६०

जुग (युग) १६५, १६६
जुगत (युक्त) ११७
जुगम (युग्म) १६५
जुगल (युगल) १६५
जुन (युन) ११७
जुद्ध (युद्ध) १४३
जुव(युवा)जन ६२
जुवति (युवति) ७५
जूथ (यूथ) १६३
जेहर [दे० = पाज़ेब] १०६
जोगी (योगी) ८३
जोति (ज्योति) ४५
जोति(ज्योति)रूप ६
जोधा (योद्धा) १४४
जोषा (योषा) ७५
जोषित (योषित्) ७५
ज्वलन ४७

झ

झटित(ति) १२१
झष ५६
झंड [दे०] १४०

ट

टाड [दे०] १०६

ड

डर [दे०] १४२
डिंभ ६२

त

तट ५३
तनमाल [दे०] १२६
तनय ८१
तनु ६७, ११८
तनुजात ८१
तपन ४०, १११
तपा [दे०] ८३

तमि(मी) ५०
तम १२२
तरन(णि) ६२
तरनि(णि) ३९
तरल १२१
तरस ९४
तरंग ५३
तरंगिनी(णी) ६४
तरु १४७, १४९
तरुन(ण) ९२
तलप (तल्प) १३१
तलार [दे०] १३५
तसकर (तस्कर) ९०
तह(तथा) सर्वत्र
तंती(त्री) १११
तंबोल(ताम्बूल)मुख १०८
तात ८१
तार (तारा) ४३
तारक ९९
तारका ४३
तापस ८३
तामरचूर (ताम्रचूड) १६०
तामरस ५४
तामसी ५०
ताल ५५, १११
तालपत्र १३८
तांडव १०३
तिक्त १०६
तिगम (तिग्म) ४९
तिगमान (तिग्मवान्) ४०
तिमरहरन(ण) ४०
तिमंगल (तिमिंगिल) ५६
तिमि ५६
तिमिर १२२

तिलक	१३९
तिलोत्तमा	३०
तीन [दे०]	१६६
तीर्थंकर	४
तुच्छ	६७
तुरग	१२१,१५३
तुरंग	१५३
तुरंगमुख	३४
तुलाकोटि	१३९
तुल्य	११७
तुषार	४३
तुहिन	४३
तुंड	९६
तोय	५२
तोष	११३
त्याग	११५
त्रास	१४२
त्रिजाम (त्रियामा)	१५०
त्रिदस(श)	१०
त्रिपथगामनि (गामिनी)	६३
त्रिपुरारि	२१
त्रिय (स्त्री)	७७
त्रिलोचन	२१
त्रिविक्रम	१२

थ

थ(स्थ)विरनर	९२
था(स्था)वर	१६८
थुति (स्तुति)	११५
थूल (स्थूल)	१४६

द

दक्खिन(णा)	३७
दत(त्त)	११५
दनुज	३५
दया	११३

दयित ७७
दरपन (दर्पण) १२१
दरस(र्श)नीय ८६
दरिद्र(दारिद्र्य)हर ८८
दरी १४५
दल १४८
दस(श)न ६७
दसनसुरंगित [दे०] १०८
दहन ४७
दंड १४०
दंत ६७
दंतपट ६७
दंती १५२
दंपति(ती) १६५
दंभ ११२
दाता ८८
दादुर(दर्दुर) ५६
दान ११५
दानव ३४
दानवदलन १३
दानि(नी) ८८
दामिनि(नी) ३३
दामिनि(नी)अधिप ३२
दामोदर १२
दार ७७
दारक ६२
दारि (दारिका) ७६
दारुन(ण) ४६
दाम ८८
दिग्गज २८
दिढ़ (दृढ) ११६
दिढकक्ख (दृढकक्ष) १५७
दितिनंदन ३५
दिन ५०

दिनमनि (णि) ३६
दिव ६
दिवस ५०
दिवा ५०
दिष्टि (दृष्टि) ६६
दिसा(शा) ३६
दीक्षित ८४
दीधिति ४५
दीन ४४
दीरघ(र्घ) ६७
दीरघा(र्घा)यु १६८
दु (द्वि) १६५
दुख (दु:ख) ७३, ११४
दु:खनिधान ७२
दु(दु:)खित ४४
दुग्ध १२६
दुरगति (दुर्गति) ७२
दुरित ७३
दुर्ग १३६
दुर्जन ८०
दुर्बल ४४
दुष्कृत ७३
दुंदुभि १११
दूत ६०
दूती ७८
दूरि (दूर) ६८
दृग (दृश्) ६६
दृष (दृषत्) १२६
देव ३२
देवकि(की)नंदन ११६
देवखात १४५
देवगुरु ४६
देवता १०
देवयोनि ३४
देवलोक ६

देवविपक्ख(च्छ)	३५	धनपति	३१
देववृता	३०	धनवान(न्)	६२
देवसरित	६३	धनंजय	२०,४७
देवायतन	१०३	धनं(न्वं)तरि	६०
देवेस(श)	११	धनु	१४१
देस(श)	६६	धनुष	१४१
देह	६३	धामिल्ल(धम्मिल्ल)	१००
द्रविन	१२७	धर(रा)	६६
द्रुहिन	११	धरनी (णी)	६५
द्वंद (द्वंद्व)	१६५	धरनी(णी)धर	३१
द्वारपाल	१३५	धरम(र्म)धुरंधर	५
द्विज	८६	धरम(र्म)राज	४६
द्विजराज	४१	धरमा(र्मा)त्मज	१६
द्विप	१५२	धरा	६६
द्वीपी	१५१	धव	७७
द्वीप	१६७	धवल	७
ध		धवलगृह	१०२
धन	१२७		
धनद	३१,३६		

धवलतरंग ६३
धान(नु) १६७
धातृ ११
धाम ४५,१०१
धामनिधि ३६
धाराधर ३२
धी १२०
धीमान(नु) ८५
धुनि (ध्वनि) ६४
धूमजो(यो)नि ३३
धूमर(ल) १२२
धूलि ६७
धेनु १५५
धैवत १०४
ध्रुव १६८
ध्वज १४०

न

नक्षत्र ४३
नखत(क्षत्र)पति ४२
नग १४५
नगर १०२
नगरद्वार १३६
नच (न्यच्) १४६
नदी ६४
नपुंसक १३२
नभ, ६,१६७
नभचारि(री) ३२
नभस्थान ४८
नरक ७२
नरकारि १३
नरम [दे०] ११६
नलिन २४
नव ११८,१६७
नवीन ११८
नँदलाल [दे०] १५

नंदन	८१	नाव[दे०]	६२
नाक	६	नासि(नासा)	६७
नाकेस(श)	२६	नासिका	६७
नाग	१५२	निकट	६८
नागर	१३६	निकर	१६३
नागरिपु	१५६	निकाय	१६४
नाटक	१०३	निकेत	१०१
नाथ	७४	निगड	७२
नाद	१०३	निचय	१६४
नाभिज	१३०	निठुर (निष्ठुर)	११६
नाम	११७	नित स्य)	११८
नाय(यि)का	७५	नितंबिनी	७६
नाराच	१४१	निदेस(श)	१३४
नारायन(ण)	१२	निधन	१२५
नारि(री	७६	निपात	१२५
नारि(री)पुरुष	१६५	निपुन(ण)	८५
नाल	४५	निरगुनी (निर्गुणी)	६

निरधनी (निर्धनी) ८७
निरय ७२
निर(र्ल)ज्जा ७६
निरंजन ६
निरंतर ६८
निरापरस (निःस्पर्श ?) ६८
निरुपम १६१
निर्घात ६०
निर्वान(ण) ७
निलय १०१
निवसन १२६
निवह १६४
निवास १०१
निशिजागरण १५७
निश्चल १६८
नि.षाद १०४
निषेव(वा) १३४
निसच(शाच)र ६०
निसमनि (निशामणि) ४१
निसा(शा) ५०
निसा(शा)चर ३५
नीच ८७,१४६
नीर ५२
नील २६,१२३
नीलकंठ २१
नीलगल १६०
नीलमणि ४८
नीलवसन १८
नीलोतप(त्प,ल ५५
नीहार ४३
नूतन ११८
नूपुर १०६,१३६
नृ ७४
नृत्य १०३

नृपयज्ञ ८४

नेता ७४

नेह (स्नेह) ११४

नैन (नयन) ६६

नैरित(ऋ त) ३६

नैरित (नैऋ त्य) ३७

प

पक्खि (पक्षी) १५९

पट १२९,१३६

पट(ट्ट-त्त)न १०२

पट्टनिवासिनी १३५

पट्टु ८५

पतनी (पत्नी) ७७

पतंग ४०,१५९

पताका १४०

प(पा)तालपुर ६९

पति ७४

पतिव्रति(त्नी) ७८

पत्त (पत्र) १४८

पथ ६८

पद १००

पदपीठ १३२

पदम (पद्म) २९,५४

पदम(द्म)नाभि १५

पदमा(द्मा) १७

पदमारमन (पद्मारमण) १५

पदमा(द्मा)लया १७

पन्नग ७१

पन्नगराज ७०

पन्नगलोक ६९

पय ५२,१२६

पयदान (पयोद) ३३

पयदानि (पयोद) ९८

परम ४

परयं(र्य)क १३१
पराग १४८
परिखा १०२
परिघ(घन) ६७
परुष ११६
परेत(=प्रेत) १४४
पर्वत १४५
पल ६४
पलक [दे०] ६६
पलास(श) १४८
पलितततु ६२
पवन ३६,४८
पवनसुत १६
पवनहित ४७
पवनाधार ७१
पवमान ४८
पवित्र ५७
पषान(षा) १२६
पसु(शु) १५५
पसु(शु)पति २१
पहुप(पुष्प)दंत ३८
पहुप(पुष्प)राग ५८
पंक ६७
पंकज ५४
पंकति (पंक्ति) १६४
पंच १६६
पंचत(ता-त्व) १२५
पंचभूतसंजात ६३
पंचम १०४
पंचमगति ७
पंचमुख १५१
पंचसरहस्थ(शरहस्त) ११०
पंडित ८५
पंथ ६८

पंथनिरोध १३६
पसु (पांशु) ६७
पाक ६२
पाथ ५२
पाद ४९
पादप १४७
पानि(णि) ६८
पाप ७३
पामर ८७
पाय(द) १००
पारगत ५
पार(रि)जात २८
पारावत १६२
पारावार ५१
पारिजात ६०
पालास(श) १२३
पालि ५३
पावक ३६,३७,४७
पावकरिपु ३३
पावकवदन १०
पावकहित ४८
पावन ५७
पार्वती २४
पावस [दे०] १०६
पास (पार्श्व) ६८,७२
पिक १६१
पिक (पपि ?) १६२
पिता ८१
पिनाककर २१
पिशाच १४४
पिसि(शि)त ६४
पिसु(शु)न ६०
पीड़ा ७३
पीत १२३

पीतपट	१३
पीन	१४६
पीयूष	३०
पीयूषरस	६१
पीवर	१४६
पुत्र	८१
पुन्य (पुण्य)	१३४
पुमान(न्)	७४
पुर	१०२
पुरनारि(री)	७६
पुररखवाल [दे०]	१३५
पुर(रु)हूत	२६
पुरंदर	२६
पुरातन	११८
पुरीष	६४
पुरुष	७४
पुरुषोत्तम	४,१५
पुरोगत(ति)	१५७
पुलिंद	६०
पुलोमजा	२७
पुहकर (पुष्कर)	६,४५
पुहुप(पुष्प)	१३४,१४८
पुंज	१६२
पुँ(पुं)डरीक	३८,५४
पूग	१६३
पूत	४७
पूतली [दे०]	६६
पूरब (पूर्व)	३७
पेचकं	१६२
पेड [दे०]	१४८
पेस(श)ल	११६
पोत	६२,६२
पौर	१३६
प्रकट	११६

प्रकृति ११९
प्रग ३३
प्रचुर ५६
प्रजा १३६
प्रजानाथ ११
प्रतिदिन ११८
प्रतिरूप ११६
प्रतिहार १३५
प्रथुरोमा ५६
प्रध्यान १३३
प्रभंजन ४८
प्रभूत ५६
प्रमदा ७५
प्रलय १२५
प्रवाल ५८
प्रवीन(ण) ८५
प्रसन(स्न)र १२६
प्रसवति (प्रसविन्नी) ८१
प्रसून १४८
प्रहार १४२
प्राकार १३६
प्राकृत ११८
प्राणहर ७०
प्रानि(णी) ६१
प्रासाद १०३
प्रीति ११४
प्रेम ११४
प्रोहन (प्रवहण) ६२

फ

फनी(णी) ७१
फलधार(धर) १४७
फंघ [दे०] ७२
फालुगु(ल्गु)न २०
फुल्लक ११४

ब

बल १८,६४,१४०
बलबंधु १४
बलवान(न्) १६
बलिधाम ६६
बलिरिपु १३
बली १५१
बहु ५६
बहुल ५६
बंदिजन १४४
बंध ७२
बं(बां)धव ८२
बंधु ८२
बाडव ४७
बाणरिपु १३
बाधा ७३
बा(वा)नर १५४
बाल ८७,६२,६५
बाला ७६
बांभन (ब्राह्मण) ८६
बांह(बाहु) ६८
बांहरक्ख (बाहुरक्ष) १३८
बि (द्वि) १६५
बिच्छुक[दे० = बिछुवा]१०६
बिल ६६
बिल्ला [दे० = बिलाव] १५६
बिंब ११६
बीज ६४
बीभत्स १०५
बुद्ध ५
बुद्धि १२०
बुध ४६
बृहस्पति ४६
बोहित [स्थ,दे०] ६२

भ

भख(क्ष) १२४
भग ४०
भग(गि)नी ८२
भगवति(ती) ८
भगवान(न्) ४
भय ४१२
भयकरन(ण) ४६,१०५
भयान(नक) १२२
भरतार(भर्ता) ७७
भव २२
भवन १०१
भवनास(श)न ४
भवानि(नी) २४
भविक १२०
भं ४३
भंग ५३
भं(भां)डार ५७
भाग १३२
भागीरथी ६३
भान(नु) ४०
भानुतेज ४५
भाम(मा) ७५
भामिनी ७५
भारती ८
भार्या ७७
भाल ६५
भावक (भावुक) १२०
भिक्षुक ८३
भिल्ल ६०
भीम १६
भीरु १४५
भुजंग ७१
भुजा ६८

भुवन ५२,६६
भूत ९१,१४४
भूतेस(श) २२
भूदारन(ण) १२६
भूदेव ८६
भूधर १४५
भूप १३३
भूमि ६५
भूरि ५९
भूषन(ण) १२९
भूसुत ४६
भृंग १५८
भृंगरुचि १२३
भृंगार ५७
भेक ५९
भोग १२४
भोगी ७१
भौंह [दे०] ९६
भौम ४६
भ्रमर १५८
भ्रात(तृ) ८२
भ्रातृजानि(नी) ८२
भ्रुव(भ्रू) ९६

म

मकर २९,५६
मकरंद १४८
मग्ग (मार्ग) ६८
मतंगजबाल १५२
मति १२०
मतिविकास(सि)नी ८
मदन ११०
मदिरा १२७
मद्य १२७
मधु १२७,१४८

मधुप १४८
मधुर १०६
मधुरिपु १३
मध्यम १०४
मन ६१
मनमत्थ (मन्मथ) ११०
मनम(न्म)थविथा (व्यथा) ११४
मनमथहरन(मन्मथहर) २१
मनसिज ११०
मनाक (क्) ६७
मनीषा १२०
मनुज ७४
मनोहरन (हर) ८६
मयूख ४४
मयूर १६०
मरकत ४८
मरजाद (मर्यादा) ५३
मरन (ण) १२५
मराल १६१
मरीचिका ४४
मरुत ४८
मल ६४
मलय १३०
मलिन ४४
मलीमसि (स) ४४
मसिबिंदु १०७
मह ४४
महंत [दे०] ८३
महादेव २२
महापद्म (घ) २६
महाहव १४३
महिला ७६
महिषा (ष) १४५
महिषी १३४

मही ६६
महीपति १३३
महीरुह १४७
मंगत [दे०] १४४
मंगल ४६,१२०
मंगला २४
मंच १३१
मंजन (मज्जन) १०७
मंजार (मार्जार) १५६
मंजुल ८९
मंडन १२९
मंडल १३७,१५७
मंडलेस (श) १३३
मंत्री १३३
मंद, ४६,८७,११६
मंदाकिनी ६३
मंदार २८
मंदिर १०१
मात(ता) ८१
मातंग १५२
मानव ७४
मानस ९१
मानिक (माणिक्य) ५८
मानुष ७४
मानुषभखन(क्षक) ३५
माया ११२
मार ११०
मारजित ५
मारतंड (मार्तण्ड) ३९
मारुत ४८
माल(ला) १५०
माल(ला)कार १४९
मांस ९४
मित्त (मित्र) ८०

मित्र	४०	मुरलीधर	१६
मिथुन	१६५	मुरारि	१३
मिथ्यात(त्व)	१२५	मुसली	१८
मिष	११२	मुंड	३५
मिंडुक(मंडूक)	५६	मूक	८७
मीन	५६	मूढ	८७
मीनकेतु	११०	मूरख(मूर्ख)	८७
मुकत(क्ता)	५८	मूरति (मूर्ति)	६३
मुकति (मुक्ति)	७	मूल	१४८
मुक(कु)ट	१३२	मूषक	१५६
मुकुर	१३१	मृग	१५४
मुकुंद	१४,२६	मृगअंक	४१
मुद	११३	मृगधूरत(र्त)	१५५
मुद्रिका	१०६	मृगमद	१३०
मुधा	१२५	मृगसूल (शूल)	१५१
मुनि	८३,१६७	मृदु	११६
मुनिधाम	१४५	मृना(णा)ल	५५

मृषा	१२५	रजनी	५०
मेखल(ला)	१३६	रतना(त्ना)गार	५१
मेघ	३२	रतिरमन(ण)	११०
मेदिनी	६५	रथं(थां)ग	१६२
मेधा	१२०	रतन	६७
मेनक(का)	३०	रदनछ(च्छ)द	६७
मोख (मोक्ष)	७	रन (रण)	१४३
मोच(चा)	१४६	रनखेत (रणक्षेत्र)	१४४
मोहन	१११	रव	६६
य		रवि	४०
यक्ष	३४	रवितनय	४६
र		रविनंद(दि)नी	६४
रकत (रक्त)	६४	रमन(ण)	१४,७७,११०
रकता(क्ता)गार	१३०	रमनी(णी)	७६
रकत	१२३	रमनी(णी)य	८६
रज	६७	रमा	१७
रजत	१२८	रस	३०,१६६,१६७

रसन(ना)	१३६	राधिकाकंत(कान्त)	१४
रसा	६५	रासभ	१५६
रसाल	६२,१४६	रासि(शि)	१६४
रंक	४४	रिक्ख (ऋक्ष)	४३
रंगभूमि	१४४	रितु (ऋतु)	१६६
रंधर(ध्र)	६६	रिपु	८०
रंभ(भा)	३०,१४६,६०	रुचि	४५
राकस (राक्षस)	३५	रुचिर	८६
राग	११४	रुद्र	१०५
रागराज (रज ?)	६६	रुधिर	६४
राजगृह	१०२	रुंडमाल	२२
राजराज	३१	रूप	१२८
राजसूय	८४	रूपाजीविका	७६
राजा	४२	रेत	६४
राजान(जन्)	१६,१३३	रेनु(णु)	६७
राजि	१६४	रेवति(ती)रमन(ण)	१८
राद्दक (?)	६७	रेंक [द्रि०]	१५६

रोध	५३	लं(लां)छन	४४
रोस (रोष)	११३	लंब	६७
रोहनि(हिणी)नंदन	१८	लंबोदर	२५
रोहित	५६	लाल (दे०)	१२३
रोहिनि(णी)रमन(ण)	४१	लीला	१२४
रौहिनेय	४६	लुब्ध(ब्ध)	८८
ल		लुलाय	१५५
लग्ग(ग्न)	६८	लेलिहान	७१
लघु	८२,१११	लेस(श)	१३४
लच्छि(क्ष्मी)	१७,६०	लोक	६६,१३६,१६६
लज्ज(ज्जा)	१०८	लोकजननि(नी)	१७
लता	१५०	लोकेस(श)	११
लपन	६६	लोचनसंग्य(ज्ञ)	१६५
ललना	७५	लोहित	१२३
लव	१३४	**व**	
ललाट	६५	वच्छ	६८
ललाम	१३६	वचन	६६

वज्र ६०
वज्रधर २६
वदन ६६
वधू ७५
वन ५२,१४७
वनपाल १४६
वनमाली १२
वनि(णि)क ६२
वनिता ७६
वपु ६६
वर ८६
वरग(वर्ग) ८६
वरट १६१
वरदानि(नी) २५
वराह १५३
वरुन(ण) ३६
वलय १३८
वलिमुख १५४
वल्लभ ७७
वल्ली १५०
वसंत १०६
वसु १२७
वसुदेवसुत १२
वसुमत्ति(ती) ६५
वसुंधरा ६६
वसीकरन (वशीकरण) १११
वंक १३७
वंदन (= सिंदूर) १०८,१३८
वंस(श) ८६
वाकवादनी (वाग्वादिनी) ८
वाजि(जी) १५३
वाटिक(का) १५०
वात ४८
वान(ण) १४१,१६६

वानि(णी)	८,६६
वाम(मा)	७५,७६
वामदेव	२२
वामन	३८
वामलोचना	७६
वायस	१६१
वायु	२७
वारन(ण)	१५२
वारं(रां)गना	७६
वारि	४२
वारिचर	५६
वारिवाह	३२
वारुनी(णी)	२७,१२७
वासर	५०
वासुकि	७०
वासुदेव	१४
वाह	१५३
वाह(वाहद्विषत्)	१५५
वाहन	६२
वाहिनी	१४०
विकराल	४६
विग्रह	६३,१४३
विचक्षन(ण)	८४
विचि (वीचि)	५३
विछुरन [दे०]	११४
विटपि(पी)	१४७
वितथ	१२४
वितान	१३१
वित्त	१२७
विथा (व्यथा)	७३
विदित	११६
विद्याधर	३४
विद्वान(न्)	८४
विधाता	११

विधि	११
विधु	४२
विधुर	१२४
विनतासुत	१५६
विनायक	२५
विनास(श)	१२५
विपक्ख(क्ष)	१५७
विप(पि)न	१४७
विप(पि)नचर	१५४
विपुल	१४६
विप्र	८६
विफल	१२५
विबुध	१०,८५
विभंग	१४६
विभा	४५
विभाकर	३६
विभावरी	५०
विभावसु	४७
विभु	७४
वियोग	११४
विरह	११४
विल	१४५
विलंबित	११६
विलास	१२४
विलासिनी	७६
विलोचन	६६
विलोल	१२१
विवर	६६
विष	५२,६०,७०
विषधर	७१
विषधारि(री)	२१
विषम	१३७
विषय	६६
विषान(ण)	१२८

विष्ठा ६४
विस(श)द ७,११६
वि(व्य)सन १६७
विसारि(री) ५६
विसा(शा)ल ६७
विस्तर १४६
विस्तीरन(र्ण) १४६
विहंगम १५९
विहाइत(पित) ११५
विहाय ६
विहार १५६
वीतराग ५
वीर ८२,१०५,१४४
वृकोदर १६
वृथा १२५
वृद्ध ६२
वृष १५५
वृषजा(या)न २३
वृषभ १५५
वृषभकेतु २३
वृंद १६४
वेग १२१
वेगगामुक १५३
वेद १६६
वेदना ७३
वेधा ११
वेनि (वेणी) १००
वेलि(ल्लि) १५०
वेसरि [दे०] १०६
वैकुंठ ७
वैजयंत्ति(ती) १४०
वैडूरज(र्य) ५८
वैरि(री) ८०
वैश्रवन(ण) ३१

व्यवहारी ६२
व्याज ११२
व्रज १६३
व्रत १२४
व्रतति १५०
व्रती ८३
व्रात १६३

श

शंभु २१
शासन १३४
शिशु ६२
शील ११६
शुचिवर्णा १३८
शृगाल १४५
शृंखल(ला) ७२
शेष ७०
श्रवन(ण) ६७
श्रुति ६७
श्रोणि ६८
श्रोत(त्र) ६७
श्रोत्र (इन्द्रियविशेष) १५८
श्वा १४७
श्वान १५७

ष

षट् १६६
षट्पद १४८
षड(ड्)ज १०४
षडक्षीन(क्षीण) ४६
षड(ण्)मुख २५
षंढ १३५

स

स(श)कल १३४
स(श)कुनि १४६
सखा ८०

सखी	७८	समर	१४३
सचिव	१३३	समवाय	१६३
सची(शची)	२७	समाज	१६३
सठ (शठ)	८७	समान	११७
सत(स्य)वादी	१६	समुद(द्र)	५१
सती	७८	समीप	६८
सद्न	१०१	समीर	४८
सदा	११८	समीरपथ	१३७
सहस(श)	११७	समुदाय	१६४
सधर्म	११७	समूह	१६३
सनीचर (शनैश्चर)	४६	स(श)यन	१३१
स(श)फरी	५६	सर	५५,(शर) १४१
सबद (शब्द)	६६,१६६	सरद (शरद)	१०६
सभा (देवसभा)	२७	सरन (शरण)	१०१
सम	११७	सरनि(णि)	६८
समता	११५	स(श)रभ	१५१
स(श)मन	४६	सरवारन (शरवारण)	१४२

सरसी	५५	ससिसेखर (शशिशेखर)	२३
सरस्वति(ती)	८	सहकार	१४६
सरिता(त्)	६४	सहचर	८०
सरिता(द)धिपति	५१	सहचरी	७८
सरीर (शरीर)	६३	सहस(स्र)किरन(ण)	३६
सरूप	११७	सहसनैन(सहस्रनयन)	२६
सरोज	५४	सहसा	१२१
सर्पी(र्पि)	१२६	सहस्रफन(ण)	७०
सर्वज्ञ	४	सहाइ(य)	८०
सर्ववल्लभा	७६	सहित	११७
स(श)लभ	१५६	सहोदर	८२
सलोक (श्लोक)	११५	संकट	१२४
सलिल	५२	संकर (शंकर)	४,२३
सविता	४०,८१	स(श)कुंत	१५६
सवर्ण	११७	सं(शं)ख	२६,५६,६१
ससांक (शशांक)	४१	सं(शं)खधर	१६
ससि(शशि)विकास	५५	संखधुनि (शंखध्वनि)	१११

संगत २०
संगर १४३
संग्राम १४३
संघ १६३
संघात १४२,१६३
संचय १६४
संज(य)म १२४
संजु(यु)ग १४३
संजो(यो)ग ११४
संतत ११८
संतति ८६
संतमस १२२
संतान ८६
संतानद्रुम २८
संताप ७३
संदान ७२
संदोह १६४
संनिधि ६८
संपराय १४३
संपा (शम्पा) ३३
संफली(शंभली) ७८
संयमी ८३
सं(=शं)वरहरन(हर) ११०
संसार ६६
संहनन ६६
सा(शा)खामृग ११४
साखि (शाखी) १४७
सागर ४१
सात ११५,(सप्त)१६७
सांत(शांत) १०५
साधु ८३,११६
सायक १४१
सा(शा)रदा ८
सारमेय १५७

सारंग ६०,१५४,१५८,१६२
सारंगधर (=शार्ङ्गधर) १६
सारव(र्व)भौम ३८
सारव(र्व)भौमनृप १३३
सा(शा दू`ल १५१
साल(शाला) १०१
साल (शाल) १६३
सा(शा)वक ८२
सिख(शिखा) १००
सिखरि (शिखरी) १४५
सिखरीस (शिखरीश) २२
सिखंडि (शिखंडी) १६०
सिखि (शिखी) ४७
सि(शि)खिवाहन २५
सिखी (शिखी) १६०
सितअंभोज ५४
सितवान (सितवर्ण) ७
सि(=शि)तिकंठ २३
सि(शि)थिल ११६
सिद्ध`त(सिद्धान्त) ८३
सिर (शिर) ६५
सिरछत्र (शिरश्छत्र) १३२
सि(शि)रोभ्रर ६५
सि(शि)रोरतन(रत्न) १३२
सि(शि)लीमुख १४१ १५८
सिव (शिव) ७,१४,२३,१७०
सिव-तिय (स्त्री) ६३
सि(शि)वनयन १६६
सिवा(शिवा) २४
सिसिर (शिशिर) ४३
सिंगार (शृङ्गार) १०५
सिन्दूर १३८
सिंधु ५१
सिंधुर १५२

सिंह	१५१	सुथि(स्थि)र	१६८
सिंहासन	१३२	सुधर्मा	२७
सीत(शीत)	४३	सुधा	३०
सीतल (शीतल)	४३	सुधासूत(ति)	४२
सीधु	१२७	सुधी	८५
सीमा	५३	सुन्दर	८६
सीर	१२६	सुभग	८६
सीरपानि(णि)	१८	सुभट	१४४
सीस (शीर्ष)	६५	सुमन	१४८
सुक (शुक)	१६१	सुमनस	१०
सुकल)शुक्ल)	७	सुमेरु	३१
सुकृत	१३४	सुर	१०,१०३
सुख	११४,११५	सुर-श्रंभ	३०
सुगत	४	सुरग (स्वर्ग)	६
सुगंध	१५०	सुरगिरी(रि)	३१
सुचि (शुचि)	५७	सुरपति	३६
सुत	८१	सुरभि	१५०

सुरमंडप	१०३
सुरवास	६
सुरा	६१,१२७
सुरालय	६
सुवर्ण	१२८
सुवासना	१५०
सुविहित	१३४
सुषिर	६६
सुहृद(द्)	८०
सु ं(= शु ं)डाल	१५२
सु ंदरी	७५
सू(= शू)कर	१५३
सूनु	८१
सून्य (शून्य)	१६७
सूपरतीक (सुप्रतीक)	३८
सूर .	३६
शूर	१४४
सूरि	८५
सूली(शूली)	२३
सृ ंग(शृ ंग)	१५८
सेज [दे०]	१३१
सेठि (श्रेष्ठी)	६२
सेना	१४०
सेनानि(नी)	२५
से(शे)मुषी	१२०
सेव(वा)	१३४
सेवक	८८
सैल (शैल)	१४५
सो(शो)णित	६४
सोपान	१३७
सोम	४१
सोमवंसि(श्य-शीय)	१६
सौध	१०२
सौम (सौम्य)	४६

सौरभ १४६
सौरि १६
स्याम (श्याम) १६,१२३
स्वभाव ११९
स्वसा ८२
स्रज(ज्) १५०
स्वेत (श्वेत) ७

ह

हय १५३.१६७
हयसेत (श्वेतहय) २०
हयँग(हैयं)गवीन १२६
हर २१
हरष (हर्ष) ११३
हरहार ७१
हरि, १२,२६,३६,४२,४८,
४६,१२८,१२१,१५३
हरिचन्दन २८
हरितै १२३
हरित(त्) ३६
हरिन(ण) १२४
हरिनारि(री) १७
हरिवाहन १२६
हरिविश्राम ६४
हल १२६
हलाहल ७०
हली १८
हंस ३६,६१,१६१
हंसवाह(हि)नी ८
हाटक १२८
हार १०६,१२०
हाल(ला) १२७
हास १०२
हाहा ३४
हित ८०,११३,११२

हिम	४३,१३०	हूहू	३४
हिमगिरितनया	२४	हृद (हद)	५९
हिमभान(नु)	१४२	हृदय	६१
हिरण्य	१२८	हेति	१३२
हीन	४४	हेम	१२८
हीरा (हीरक)	५८	हेमगिरि	३१
हुलास(श)	५७	हेलि	४०

"अनेकान्त"

सत्य, शान्ति और लोकहितका सन्देश--

मासिकपत्र वीरसेवामन्दिर सरसावा जि० सहारनपुर में पं० जुगलकिशोर मुख्तारके सम्पादकत्वमें प्रकाशित होता है। इसमें नीति-विज्ञान-दर्शन-इतिहास-कला और समाज-शास्त्रके प्रौढ विचारोंसे परिपूर्ण तथा सर्वसाधारणके लिए उपयोगी और मनन करने योग्य महत्वके सुन्दर लेख रहते हैं।

पत्रकी नति उदार है और यह सामाजिक झगड़े टंटोंसे सदा अलग रह कर लोक-सेवाका ठोस कार्य किया करता है। जिन्होंने अब तक यह पत्र न देखा हो उन्हें अवश्य ही इसे मँगा कर पढ़ना चाहिये। वार्षिक मूल्य ३) है।

व्यवस्थापक 'अनेकान्त'